قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ

पारा - 12

eParah

وَمَا	مِنْ دَآبَّةٍ	فِي الْاَرْضِ	اِلَّا	عَلَى اللّٰهِ	رِزْقُهَا	وَيَعْلَمُ
और नहीं	कोई जानदार	ज़मीन में	मगर	अल्लाह ही पर है	रिज़्क़ उसका	और वो जानता है

مُسْتَقَرَّهَا	وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ	كُلٌّ	فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ⑥
ठिकाना उसका	और सौंपे जाने की जगह उसकी	सब कुछ	एक वाज़ेह किताब में है

وَهُوَ	الَّذِيْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
और वो ही है	जिसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	छः दिनों में

وَّكَانَ	عَرْشُهٗ	عَلَى الْمَآءِ	لِيَبْلُوَكُمْ	اَيُّكُمْ	اَحْسَنُ	عَمَلًا ؕ
और था	अर्श उसका	पानी पर	ताकि वो आज़माए तुम्हें	कौन तुम में से	ज़्यादा अच्छा है	अमल में

وَلَئِنْ	قُلْتَ	اِنَّكُمْ	مَّبْعُوْثُوْنَ	مِنْ بَعْدِ	الْمَوْتِ	لَيَقُوْلَنَّ
और अलबत्ता अगर	कहें आप	बेशक तुम	उठाए जाने वाले हो	बाद	मौत के	अलबत्ता ज़रूर कहेंगे

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّا	سِحْرٌ	مُّبِيْنٌ ⑦	وَلَئِنْ
वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	नहीं	ये	मगर	जादू	खुल्लम-खुल्ला	और अलबत्ता अगर

اَخَّرْنَا	عَنْهُمُ	الْعَذَابَ	اِلٰٓى اُمَّةٍ	مَّعْدُوْدَةٍ	لَّيَقُوْلُنَّ	مَا
मुअख़्ख़र कर दें हम	इनसे	अज़ाब को	एक मुद्दत तक	शुमार की हुई	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	किस चीज़ ने

يَحْبِسُهٗ ؕ	اَلَا	يَوْمَ	يَاْتِيْهِمْ	لَيْسَ	مَصْرُوْفًا	عَنْهُمْ
रोक रखा है उसे	ख़बरदार	जिस दिन	वो आ जाएगा उनके पास	नहीं	फेरा जाएगा	उनसे

وَحَاقَ	بِهِمْ	مَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑧ ع	وَلَئِنْ	اَذَقْنَا
और घेर लेगा	उन्हें	जो	थे वो	जिसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	और अलबत्ता अगर	चखाएं हम

ع 1/8/1

الْاِنْسَانَ	مِنَّا	رَحْمَةً	ثُمَّ	نَزَعْنٰهَا	مِنْهُ ج	اِنَّهٗ	لَيَئُوْسٌ
इंसान को	अपनी तरफ़ से	रहमत	फिर	छीन लें हम उसको	उससे	बेशक वो	अलबत्ता बहुत मायूस होने वाला

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَفُوْرٌ ⑨	وَلَئِنْ	اَذَقْنٰهُ	نَعْمَآءَ	بَعْدَ	ضَرَّآءَ	مَسَّتْهُ	لَيَقُوْلَنَّ
बहुत नाशुक्रा है	और अलबत्ता अगर	चखाएं हम उसे	आसाइश	बाद	तकलीफ़ के	जो पहुंची उसे	अलबत्ता वो ज़रूर कहेगा

ذَهَبَ	السَّيِّاٰتُ	عَنِّيْ ط	اِنَّهٗ	لَفَرِحٌ	فَخُوْرٌ ⑩ لا	اِلَّا
दूर हो गईं	बुराइयां (तकलीफ़ें)	मुझसे	बेशक वो	अलबत्ता बहुत इतराने वाला	बहुत फ़ख़्र करने वाला है	सिवाए

الَّذِيْنَ	صَبَرُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ ط	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	مَّغْفِرَةٌ
उनके जिन्होंने	सब्र किया	और उन्होंने अमल किए	नेक	यही लोग हैं	उनके लिए है	बख़्शिश

وَّاَجْرٌ	كَبِيْرٌ ⑪	فَلَعَلَّكَ	تَارِكٌۢ	بَعْضَ	مَا	يُوْحٰٓى	اِلَيْكَ
और अज्र	बहुत बड़ा	तो शायद आप	छोड़ने वाले हैं	बाज़ हिस्सा	उसका जो	वही किया गया	तरफ़ आपके

وَضَآئِقٌۢ	بِهٖ	صَدْرُكَ	اَنْ	يَّقُوْلُوْا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْهِ
और तंग होने वाला है	साथ इसके	सीना आपका	कि	वो कहेंगे	क्यों नहीं	नाज़िल किया गया	उस पर

كَنْزٌ	اَوْ	جَآءَ	مَعَهٗ	مَلَكٌ ط	اِنَّمَآ	اَنْتَ	نَذِيْرٌ ط	وَاللّٰهُ
कोई ख़ज़ाना	या	आया	साथ उसके	कोई फ़रिश्ता	बेशक	आप तो	डराने वाले हैं	और अल्लाह

عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	وَّكِيْلٌ ⑫ ط	اَمْ	يَقُوْلُوْنَ	افْتَرٰىهُ ط	قُلْ	فَاْتُوْا
ऊपर	हर	चीज़ के	निगरान है	क्या	वो कहते हैं	इसने गढ़ लिया इसे	कह दीजिए	पस ले आओ

بِعَشْرِ	سُوَرٍ	مِّثْلِهٖ	مُفْتَرَيٰتٍ	وَّادْعُوْا	مَنِ	اسْتَطَعْتُمْ
दस	सूरतें	मानिंद इसके	गढ़ी हुई	और बुला लो	उन्हें जिनकी	इस्तिताअत रखते हो तुम

مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ⑬	فَاِلَّمْ	يَسْتَجِيْبُوْا
सिवाए	अल्लाह के	अगर	हो तुम	सच्चे	फिर अगर ना	वो जवाब दें

لَكُمْ	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّمَآ	اُنْزِلَ	بِعِلْمِ اللّٰهِ	وَاَنْ	لَّآ	اِلٰهَ	اِلَّا
तुम्हें	तो जान लो	कि बेशक	ये नाज़िल किया गया है	अल्लाह के इल्म से	और ये कि	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الدُّنْيَا	الْحَيٰوةَ	يُرِيْدُ	كَانَ	مَنْ	مُّسْلِمُوْنَ (14)	اَنْتُمْ	فَهَلْ	هُوَ ج
दुनिया की	ज़िंदगी	चाहता	है	जो कोई	इस्लाम लाने वाले हो	तुम	तो क्या	वो ही

فِيْهَا	وَهُمْ	فِيْهَا	اَعْمَالَهُمْ	اِلَيْهِمْ	نُوَفِّ	وَزِيْنَتَهَا
उसमें	और वो	उसमें	उनके आमाल (का अजर)	तरफ़ उनके	हम पूरा-पूरा देंगे	और ज़ीनत उसकी

اِلَّا	فِي الْاٰخِرَةِ	لَهُمْ	لَيْسَ	الَّذِيْنَ	اُولٰٓئِكَ	لَا يُبْخَسُوْنَ (15)
मगर	आख़िरत में	उनके लिए	नहीं है	वो जो	यही लोग हैं	ना वो कमी किए जाएंगे

يَعْمَلُوْنَ (16)	كَانُوْا	مَّا	وَبٰطِلٌ	فِيْهَا	صَنَعُوْا	مَا	وَحَبِطَ	النَّارُ صلے
वो अमल करते	थे वो	जो कुछ	और बातिल है	उसमें	उन्होंने किया	जो	और ज़ाया हो गया	आग

مِّنْهُ	شَاهِدٌ	وَيَتْلُوْهُ	مِّنْ رَّبِّهٖ	عَلٰى بَيِّنَةٍ	كَانَ	اَفَمَنْ
उसकी तरफ़ से	एक गवाह	और पीछे आता हो उसके	अपने रब की तरफ़ से	एक वाज़ेह दलील पर	हो	क्या भला वो शख़्स जो

يُؤْمِنُوْنَ	اُولٰٓئِكَ	وَّرَحْمَةً ط	اِمَامًا	مُوْسٰٓى	كِتٰبُ	وَمِنْ قَبْلِهٖ
जो ईमान रखते हैं	यही लोग हैं	और रहमत	इमाम/रहनुमा	मूसा की	किताब	और इससे पहले थी

مَوْعِدُهٗ ج	فَالنَّارُ	مِنَ الْاَحْزَابِ	بِهٖ	يَّكْفُرْ	وَمَنْ	بِهٖ ط
उसकी वादागाह है	तो आग	गिरोहों में से	इसका	कुफ़्र करेगा	और जो कोई	इस पर

وَلٰكِنَّ	مِنْ رَّبِّكَ	الْحَقُّ	اِنَّهُ	مِّنْهُ ق	فِيْ مِرْيَةٍ	تَكُ	فَلَا
और लेकिन	आपके रब की तरफ़ से	हक़ है	बेशक वो	इससे	किसी शक में	हों आप	पस ना

افْتَرٰى	مِمَّنِ	اَظْلَمُ	وَمَنْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (17)	النَّاسِ	اَكْثَرَ
गढ़ ले	उससे जो	बड़ा ज़ालिम है	और कौन	नहीं वो ईमान लाते	लोग	अक्सर

الْاَشْهَادُ	وَيَقُوْلُ	عَلٰى رَبِّهِمْ	يُعْرَضُوْنَ	اُولٰٓئِكَ	كَذِبًا ط	عَلَى اللّٰهِ
गवाह	और कहेंगे	अपने रब पर	जो पेश किए जाएंगे	यही लोग हैं	झूठ	अल्लाह पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ⑱ لا	اللّٰهِ	لَعْنَةُ	اَلَا	عَلٰى رَبِّهِمْ ج	كَذَبُوْا	الَّذِيْنَ	هٰٓؤُلَآءِ
ज़ालिमों पर	अल्लाह की	लानत है	ख़बरदार	अपने रब पर	झूठ बोला	वो लोग जिन्होंने	ये हैं

وَهُمْ	عِوَجًا ط	وَيَبْغُوْنَهَا	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	يَصُدُّوْنَ	الَّذِيْنَ
और वो	टेढ़ापन	और तलाश करते हैं उसमें	अल्लाह के रास्ते से	रोकते हैं	वो लोग जो

فِي الْاَرْضِ	مُعْجِزِيْنَ	يَكُوْنُوْا	لَمْ	اُولٰٓئِكَ	كٰفِرُوْنَ ⑲	هُمْ	بِالْاٰخِرَةِ
ज़मीन में	आजिज़ करने वाले	वो थे	ना	यही लोग	इंकारी हैं	वो ही	आख़िरत के

لَهُمُ	يُضٰعَفُ	مِنْ اَوْلِيَآءَ م	اللّٰهِ	مِّنْ دُوْنِ	لَهُمْ	كَانَ	وَمَا
उनके लिए	दोगुना किया जाएगा	कोई मददगार	अल्लाह के	सिवाए	उनके लिए	था	और नहीं

وقف لازم

يُبْصِرُوْنَ ⑳	كَانُوْا	وَمَا	السَّمْعَ	يَسْتَطِيْعُوْنَ	كَانُوْا	مَا	الْعَذَابُ ط
वो देखते	थे वो	और ना ही	सुनने की	वो इस्तिताअत रखते	थे वो	ना	अज़ाब

كَانُوْا	مَّا	عَنْهُمْ	وَضَلَّ	اَنْفُسَهُمْ	خَسِرُوْٓا	الَّذِيْنَ	اُولٰٓئِكَ
थे वो	जो कुछ	उनसे	और गुम हो गया	अपनी जानों को	ख़सारे में डाला	जिन्होंने	यही लोग हैं

الْاَخْسَرُوْنَ ㉒	هُمُ	فِي الْاٰخِرَةِ	اَنَّهُمْ	لَا جَرَمَ	يَفْتَرُوْنَ ㉑
जो सबसे ज़्यादा ख़सारा पाने वाले हैं	वो ही हैं	आख़िरत में	बेशक वो	नहीं कोई शक	वो गढ़ा करते

اِلٰى رَبِّهِمْ لا	وَاَخْبَتُوْٓا	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ
तरफ़ अपने रब के	और उन्होंने आजिज़ी की	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	वो जो	बेशक

الْفَرِيْقَيْنِ	مَثَلُ	خٰلِدُوْنَ ㉓	فِيْهَا	هُمْ	الْجَنَّةِ ج	اَصْحٰبُ	اُولٰٓئِكَ
दो गिरोहों की	मिसाल	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	वो	जन्नत के	साथी	यही लोग हैं

مَثَلًا ط	يَسْتَوِيٰنِ	هَلْ	وَالسَّمِيْعِ ط	وَالْبَصِيْرِ	وَالْاَصَمِّ	كَالْاَعْمٰى
मिसाल में	ये दोनों बराबर हो सकते हैं	क्या	और सुनने वाले के है	और देखने वाले	और बहरे के है	मानिंद अंधे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 2 16 2

أَفَلَا	تَذَكَّرُونَ ﴿24﴾	وَلَقَدْ	أَرْسَلْنَا	نُوحًا	إِلَىٰ	قَوْمِهِ	إِنِّي
क्या भला नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	नूह को	तरफ़	उसकी क़ौम के	बेशक मैं

لَكُمْ	نَذِيرٌ	مُبِينٌ ﴿25﴾	أَنْ	لَا تَعْبُدُوا	إِلَّا	اللَّهَ	إِنِّي
तुम्हारे लिए	डराने वाला हूं	खुल्लम-खुल्ला	कि	ना तुम इबादत करो	मगर	अल्लाह की	बेशक मैं

أَخَافُ	عَلَيْكُمْ	عَذَابَ	يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿26﴾	فَقَالَ	الْمَلَأُ	الَّذِينَ
मैं डरता हूं	तुम पर	अज़ाब से	दर्दनाक दिन के	तो कहा	सरदारों ने	जिन्होंने

كَفَرُوا	مِنْ قَوْمِهِ	مَا	نَرَاكَ	إِلَّا	بَشَرًا	مِثْلَنَا	وَمَا
कुफ़्र किया था	उसकी क़ौम में से	नहीं	हम देखते तुझे	मगर	एक इंसान	अपने जैसा	और नहीं

نَرَاكَ	اتَّبَعَكَ	إِلَّا	الَّذِينَ	هُمْ	أَرَاذِلُنَا	بَادِيَ	الرَّأْيِ
हम देखते तुझे	कि पैरवी की तेरी	मगर	उन लोगों ने जो	वो	कमतर हैं हमसे	बज़ाहिर	देखने में

وَمَا	نَرَىٰ	لَكُمْ	عَلَيْنَا	مِنْ فَضْلٍ	بَلْ	نَظُنُّكُمْ	كَاذِبِينَ ﴿27﴾
और नहीं	हम देखते	तुम्हारे लिए	अपने ऊपर	कोई फ़ज़ीलत	बल्कि	हम समझते हैं तुम्हें	झूठे

قَالَ	يَا قَوْمِ	أَرَأَيْتُمْ	إِنْ	كُنْتُ	عَلَىٰ بَيِّنَةٍ	مِنْ رَبِّي
उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	क्या देखा तुमने	अगरचे	हूं मैं	एक वाज़ेह दलील पर	अपने रब की तरफ़ से

وَآتَانِي	رَحْمَةً	مِنْ عِنْدِهِ	فَعُمِّيَتْ	عَلَيْكُمْ	أَنُلْزِمُكُمُوهَا
और उसने दी हो मुझे	रहमत	अपने पास से	फिर वो छुपा दी गई हो	तुम पर	क्या हम लाज़िम कर दें तुम पर उसे

وَأَنْتُمْ	لَهَا	كَارِهُونَ ﴿28﴾	وَيَا قَوْمِ	لَا أَسْأَلُكُمْ	عَلَيْهِ	مَالًا	إِنْ
जबकि तुम	इसे	नापसंद करने वाले हो	और ऐ मेरी क़ौम	नहीं मैं सवाल करता तुमसे	इस पर	किसी माल का	नहीं

أَجْرِيَ	إِلَّا	عَلَى اللَّهِ	وَمَا	أَنَا	بِطَارِدِ	الَّذِينَ	آمَنُوا
अज्र मेरा	मगर	अल्लाह पर	और नहीं	मैं	दूर करने वाला	उन्हें जो	ईमान लाए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَجْهَلُوْنَ (29)	قَوْمًا	اَرٰىكُمْ	وَلٰكِنِّيْٓ	رَبِّهِمْ	مُّلٰقُوْا	اِنَّهُمْ
कि तुम जहालत बरत रहे हो	ऐसे लोग	देखता हूं तुम्हें	और लेकिन मैं	अपने रब से	मुलाक़ात करने वाले हैं	बेशक वो

اَفَلَا	طَرَدْتُّهُمْ ط	اِنْ	مِنَ اللّٰهِ	يَّنْصُرُنِيْ	مَنْ	وَيٰقَوْمِ
क्या भला नहीं	दूर कर दिया मैंने उन्हें	अगर	अल्लाह से (बचाने में)	मदद करेगा मेरी	कौन	और ऐ मेरी क़ौम

وَلَآ	اللّٰهِ	خَزَآئِنُ	عِنْدِيْ	لَكُمْ	اَقُوْلُ	وَلَآ	تَذَكَّرُوْنَ (30)
और ना	अल्लाह के	ख़ज़ाने हैं	मेरे पास	तुम्हें	मैं कहता	और नहीं	तुम नसीहत पकड़ते

لِلَّذِيْنَ	اَقُوْلُ	وَّلَآ	مَلَكٌ	اِنِّيْ	اَقُوْلُ	وَلَآ	الْغَيْبَ	اَعْلَمُ
उनके लिए जिन्हें	मैं कहता हूं	और ना	कोई फ़रिश्ता हूं	कि मैं	मैं कहता हूं	और ना	ग़ैब को	मैं जानता हूं

اَعْلَمُ	اَللّٰهُ	خَيْرًا ط	اللّٰهُ	يُّؤْتِيَهُمُ	لَنْ	اَعْيُنُكُمْ	تَزْدَرِيْٓ
ख़ूब जानता है	अल्लाह	कोई भलाई	अल्लाह	देगा उन्हें	कि हरगिज़ ना	निगाहें तुम्हारी	हक़ीर समझती हैं

يٰنُوْحُ	قَالُوْا	لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (31)	اِذًا	اِنِّيْٓ	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ صلے ج	بِمَا
ऐ नूह	उन्होंने कहा	ज़रूर ज़ालिमों में से हुंगा	तब	बेशक मैं	उनके नफ़्सों में है	उसे जो

تَعِدُنَآ	بِمَا	فَاْتِنَا	جِدَالَنَا	فَاَكْثَرْتَ	جٰدَلْتَنَا	قَدْ
तू वादा देता है हमें	वो जिसका	पस ले आ हमारे पास	झगड़ा हमसे	फिर कसरत से किया तूने	झगड़ा किया तूने हमसे	तहक़ीक़

اللّٰهُ	بِهِ	يَاْتِيْكُمْ	اِنَّمَا	قَالَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (32)	كُنْتَ	اِنْ
अल्लाह	उसको	लाएगा तुम पर	बेशक	उसने कहा	सच्चों में से	है तू	अगर

نُصْحِيْٓ	يَنْفَعُكُمْ	وَلَا	بِمُعْجِزِيْنَ (33)	اَنْتُمْ	وَمَآ	شَآءَ	اِنْ
ख़ैरख़्वाही मेरी	फ़ायदा देगी तुम्हें	और नहीं	आजिज़ करने वाले	तुम	और नहीं	वो चाहे	अगर

يُّرِيْدُ	اللّٰهُ	كَانَ	اِنْ	لَكُمْ	اَنْصَحَ	اَنْ	اَرَدْتُّ	اِنْ
चाहता	अल्लाह	है	अगर	तुम्हारी	मैं ख़ैरख़्वाही करुं	कि	मैं चाहूं	अगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَقُوْلُوْنَ	اَمْ	تُرْجَعُوْنَ ۝34	وَاِلَيْهِ	رَبُّكُمْ ۣ	هُوَ	يُّغْوِيَكُمْ ۭ	اَنْ
वो कहते हैं	क्या	तुम लौटाए जाओगे	और तरफ़ उसी के	रब है तुम्हारा	वो	वो भटका दे तुम्हें	कि

وَاَنَا	اِجْرَامِيْ	فَعَلَيَّ	افْتَرَيْتُهٗ	اِنِ	قُلْ	افْتَرٰىهُ ۭ
और मैं	जुर्म करना मेरा	तो मुझ ही पर है	गढ़ा है मैंने उसे	अगर	कह दीजिए	इसने गढ़ लिया है उसे

لَنْ	اَنَّهٗ	اِلٰى نُوْحٍ	وَاُوْحِيَ	تُجْرِمُوْنَ ۝35 ع	مِّمَّا	بَرِيْۗءٌ
हरगिज़ ना	कि बेशक वो	तरफ़ नूह के	और वही की गई	तुम जुर्म करते हो	उससे जो	बरीउज़्ज़िम्मा हूं

ع 11 3 3

تَبْتَىِٕسْ	فَلَا	اٰمَنَ	قَدْ	مَنْ	اِلَّا	مِنْ قَوْمِكَ	يُّؤْمِنَ
तू ग़म कर	तो ना	ईमान ला चुका	तहक़ीक़	उसके जो	सिवाए	तेरी क़ौम में से	ईमान लाएगा

وَوَحْيِنَا	بِاَعْيُنِنَا	الْفُلْكَ	وَاصْنَعِ	يَفْعَلُوْنَ ۝36 ښ	كَانُوْا	بِمَا
और हमारी वही के मुताबिक़	हमारी निगाहों के सामने	कश्ती	और तू बना	वो करते	हैं वो	बवजह उसके जो

مُّغْرَقُوْنَ ۝37	اِنَّهُمْ	ظَلَمُوْا ۚ	فِي الَّذِيْنَ	تُخَاطِبْنِيْ	وَلَا
ग़र्क़ किए जाने वाले हैं	बेशक वो	ज़ुल्म किया	उनके बारे में जिन्होंने	तू मुख़ातिब होना मुझसे	और ना

سَخِرُوْا	مِّنْ قَوْمِهٖ	مَلَاٌ	عَلَيْهِ	مَرَّ	وَكُلَّمَا	الْفُلْكَ ۣ	وَيَصْنَعُ
वो मज़ाक़ करते	उसकी क़ौम में से	सरदार	उस पर	गुज़रते	और जब कभी	कश्ती	और वो बना रहा था

مِنْكُمْ	نَسْخَرُ	فَاِنَّا	مِنَّا	تَسْخَرُوْا	اِنْ	قَالَ	مِنْهُ ۭ
तुमसे	हम मज़ाक़ करेंगे	तो बेशक हम भी	हमसे	तुम मज़ाक़ करते हो	अगर	वो कहता	उससे

عَذَابٌ	يَّاْتِيْهِ	مَنْ	تَعْلَمُوْنَ ۙ	فَسَوْفَ	تَسْخَرُوْنَ ۝38 ۭ	كَمَا
अज़ाब	आएगा उसके पास	कौन है जो	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब	तुम मज़ाक़ करते हो	जैसा कि

جَاۗءَ	اِذَا	حَتّٰٓى	مُّقِيْمٌ ۝39	عَذَابٌ	عَلَيْهِ	وَيَحِلُّ	يُّخْزِيْهِ
आ गया	जब	यहां तक कि	दाइमी	अज़ाब	उस पर	और उतरेगा	जो रुस्वा कर देगा उसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْرُنَا	وَفَارَ	التَّنُّوْرُ ۙ	قُلْنَا	احْمِلْ	فِيْهَا	مِنْ كُلٍّ	زَوْجَيْنِ
हुक्म हमारा	और जोश मारा	तन्नूर ने	कहा हमने	सवार कर ले	इसमें	हर (क़िस्म) से	जोड़े

اثْنَيْنِ	وَاَهْلَكَ	اِلَّا	مَنْ	سَبَقَ	عَلَيْهِ	الْقَوْلُ	وَمَنْ	اٰمَنَ ؕ
दो (नर,मादा)	और अपने घर वालों को	सिवाए	उसके जो	गुज़र चुकी	उस पर	बात	और उनको जो	ईमान लाए

وَمَآ	اٰمَنَ	مَعَهٗٓ	اِلَّا	قَلِيْلٌ ﴿40﴾	وَقَالَ	ارْكَبُوْا	فِيْهَا
और नहीं	ईमान लाए	साथ उसके	मगर	बहुत थोड़े	और उसने कहा	सवार हो जाओ	इसमें

بِسْمِ	اللّٰهِ	مَجْرٖىهَا	وَمُرْسٰىهَا ؕ	اِنَّ	رَبِّيْ	لَغَفُوْرٌ
साथ नाम	अल्लाह के	चलना है इसका	और ठहरना है इसका	बेशक	मेरा रब	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है

قرء حفص بفتح الميم ، وامالة الراء 12

رَّحِيْمٌ ﴿41﴾	وَهِيَ	تَجْرِيْ	بِهِمْ	فِيْ مَوْجٍ	كَالْجِبَالِ ۟	وَنَادٰى
निहायत रहम करने वाला है	और वो	चल रही थी	साथ उनके	मौज/लहर में	पहाड़ों जैसी	और पुकारा

نُوْحُ ۨ	ابْنَهٗ	وَكَانَ	فِيْ مَعْزِلٍ	يّٰبُنَيَّ	ارْكَبْ	مَّعَنَا	وَلَا
नूह ने	अपने बेटे को	और वो था	अलग जगह में	ऐ मेरे बेटे	सवार हो जाओ	साथ हमारे	और ना

تَكُنْ	مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿42﴾	قَالَ	سَاٰوِيْٓ	اِلٰى جَبَلٍ	يَّعْصِمُنِيْ
तुम हो	साथ काफ़िरों के	वो बोला	अनक़रीब मैं पनाह ले लुंगा	तरफ़ एक पहाड़ के	वो बचा लेगा मुझे

مِنَ الْمَآءِ ؕ	قَالَ	لَا عَاصِمَ	الْيَوْمَ	مِنْ اَمْرِ	اللّٰهِ	اِلَّا	مَنْ
पानी से	कहा	नहीं कोई बचाने वाला	आज के दिन	हुक्म से	अल्लाह के	मगर	जिस पर

رَّحِمَ ۚ	وَحَالَ	بَيْنَهُمَا	الْمَوْجُ	فَكَانَ	مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿43﴾
वो रहम करे	और हायल हो गई	दर्मियान उन दोनों के	एक मौज	तो हो गया वो	ग़र्क़ होने वालों में से

وَقِيْلَ	يٰٓاَرْضُ	ابْلَعِيْ	مَآءَكِ	وَيٰسَمَآءُ	اَقْلِعِيْ	وَغِيْضَ
और कह दिया गया	ऐ ज़मीन	निगल जा	पानी अपना	और ऐ आसमान	थम जा	और ख़ुश्क कर दिया गया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بُعْدًا	وَقِيْلَ	عَلَى الْجُوْدِيِّ	وَاسْتَوَتْ	الْاَمْرُ	وَقُضِيَ	الْمَآءُ
दूरी है	और कह दिया गया	जूदी पर	और जा ठहरी (कश्ती)	मामले का	और फ़ैसला कर दिया गया	पानी

رَبِّ	فَقَالَ	رَّبَّهٗ	نُوْحٌ	وَنَادٰى	الظّٰلِمِيْنَ (44)	لِّلْقَوْمِ
ऐ मेरे रब	तो कहा	अपने रब को	नूह ने	और पुकारा	जो ज़ालिम हैं	उन लोगों के लिए

ع

وَاَنْتَ	الْحَقُّ	وَعْدَكَ	وَاِنَّ	مِنْ اَهْلِيْ	ابْنِيْ	اِنَّ
और तू	सच्चा है	वादा तेरा	और बेशक	मेरे घर वालों में से है	मेरा बेटा	बेशक

مِنْ اَهْلِكَ ۚ	لَيْسَ	اِنَّهٗ	يٰنُوْحُ	قَالَ	الْحٰكِمِيْنَ (45)	اَحْكَمُ
तेरे घर वालों में से	नहीं है	बेशक वो	ऐ नूह	फ़रमाया	सब हाकिमों से	बेहतर हाकिम है

لَكَ	لَيْسَ	مَا	تَسْـَٔلْنِ	فَلَا	صَالِحٍ ۖ	غَيْرُ	عَمَلٌ	اِنَّهٗ
तुझे	नहीं	उसका जो	तू सवाल कर मुझसे	तो ना	सालेह	ग़ैर	एक अमल है	बेशक वो

مِنَ الْجٰهِلِيْنَ (46)	تَكُوْنَ	اَنْ	اَعِظُكَ	اِنِّيْۤ	عِلْمٌ ؕ	بِهٖ
जाहिलों में से	(ना) तू हो जा	कि	मैं नसीहत करता हूं तुझे	बेशक मैं	कोई इल्म	जिसका

لَيْسَ	مَا	اَسْـَٔلَكَ	اَنْ	اَعُوْذُ بِكَ	اِنِّيْۤ	رَبِّ	قَالَ
नहीं	उसका जो	मैं सवाल करुं तुझसे	कि	मैं पनाह लेता हूं तेरी	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उसने कहा

اَكُنْ	وَتَرْحَمْنِيْۤ	تَغْفِرْ لِيْ	وَاِلَّا	عِلْمٌ ؕ	بِهٖ	لِيْ
मैं हो जाऊंगा	और (ना) तूने रहम किया मुझ पर	तूने बख़्शा मुझे	और अगर ना	कोई इल्म	उसका	मुझे

وَبَرَكٰتٍ	مِّنَّا	بِسَلٰمٍ	اهْبِطْ	يٰنُوْحُ	قِيْلَ	مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ (47)
और बरकतों के	हमारी तरफ़ से	साथ सलामती के	उतर जा	ऐ नूह	कहा गया	ख़सारा पाने वालों में से

سَنُمَتِّعُهُمْ	وَاُمَمٌ	مَّعَكَ ؕ	مِّمَّنْ	وَعَلٰۤى اُمَمٍ	عَلَيْكَ
अनक़रीब हम फ़ायदा देंगे उन्हें	और कई जमाअतें	साथ हैं तेरे	उनमें से जो	और जमाअतों पर	तुझ पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ثُمَّ	يَمَسُّهُمْ	مِّنَّا	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (48)	تِلْكَ	مِنْ اَنْۢبَآءِ
फिर	पहुंचेगा उन्हें	हमारी तरफ़ से	अज़ाब	दर्दनाक	ये	ख़बरों में से है

الْغَيْبِ	نُوْحِيْهَآ	اِلَيْكَ ۚ	مَا	كُنْتَ	تَعْلَمُهَآ	اَنْتَ	وَلَا
ग़ैब की	हम वही कर रहे हैं उन्हें	तरफ़ आपके	ना	थे आप	आप जानते उन्हें	आप	और ना ही

قَوْمُكَ	مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ	فَاصْبِرْ ۛ	اِنَّ	الْعَاقِبَةَ	لِلْمُتَّقِيْنَ (49) ع
क़ौम आपकी	इससे पहले	पस सब्र कीजिए	बेशक	अंजाम	मुत्तक़ी लोगों के लिए है

وَاِلٰى	عَادٍ	اَخَاهُمْ	هُوْدًا ۭ	قَالَ	يٰقَوْمِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ
और तरफ़	आद के	उनके भाई	हूद को (भेजा)	उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो	अल्लाह की

مَا	لَكُمْ	مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ۭ	اِنْ	اَنْتُمْ	اِلَّا	مُفْتَرُوْنَ (50)
नहीं	तुम्हारे लिए	कोई इलाह (बरहक़)	उसके सिवा	नहीं	तुम	मगर	झूठ गढ़ने वाले

يٰقَوْمِ	لَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ	اَجْرًا ۭ	اِنْ	اَجْرِيَ	اِلَّا	عَلَى
ऐ मेरी क़ौम	नहीं	मैं सवाल करता तुमसे	इस पर	किसी अज्र का	नहीं	अज्र मेरा	मगर	उस पर

الَّذِيْ	فَطَرَنِيْ ۭ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ (51)	وَيٰقَوْمِ	اسْتَغْفِرُوْا
जिसने	पैदा किया मुझे	क्या फिर नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	और ऐ मेरी क़ौम	बख़्शिश माँगो

رَبَّكُمْ	ثُمَّ	تُوْبُوْٓا	اِلَيْهِ	يُرْسِلِ	السَّمَآءَ	عَلَيْكُمْ	مِّدْرَارًا
अपने रब से	फिर	तौबा करो	तरफ़ उसके	वो भेजेगा	आसमान को	तुम पर	बहुत बरसने वाला

وَّيَزِدْكُمْ	قُوَّةً	اِلٰى	قُوَّتِكُمْ	وَلَا	تَتَوَلَّوْا	مُجْرِمِيْنَ (52)	قَالُوْا
और ज़्यादा देगा तुम्हें	क़ुव्वत	तरफ़	तुम्हारी क़ुव्वत के	और ना	तुम मुंह फेरो	मुजरिम बन कर	उन्होंने कहा

يٰهُوْدُ	مَا	جِئْتَنَا	بِبَيِّنَةٍ	وَّمَا	نَحْنُ	بِتَارِكِيْٓ	اٰلِهَتِنَا
ऐ हूद	नहीं	लाया तू हमारे पास	कोई वाज़ेह दलील	और नहीं हैं	हम	छोड़ने वाले	अपने इलाहों को

ع 14 4 4
معانقة 9
الوقف على فاصبر، احسن، اليق 12

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّا	نَّقُوْلُ	اِنْ	بِمُؤْمِنِيْنَ (53)	لَكَ	نَحْنُ	وَمَا	عَنْ قَوْلِكَ
मगर	हम कहते	नहीं	ईमान लाने वाले	तुझ पर	हम	और नहीं हैं	तेरी बात से

اللّٰهَ	اُشْهِدُ	اِنِّيْٓ	قَالَ	بِسُوْٓءٍ ؕ	اٰلِهَتِنَا	بَعْضُ	اعْتَرٰىكَ
अल्लाह को	मैं गवाह बनाता हूं	बेशक मैं	उसने कहा	साथ किसी तकलीफ़ के	हमारे इलाहों ने	बाज़	(ये कि) मुब्तिला कर दिया है तुम्हें

مِنْ دُوْنِهٖ	تُشْرِكُوْنَ (54) لا	مِمَّا	بَرِيْٓءٌ	اَنِّيْ	وَاشْهَدُوْٓا
उसके सिवा	तुम शरीक करते हो	उनसे जिन्हें	बरीउज़्ज़िम्मा हूं	बेशक मैं	और तुम गवाह रहो

تَوَكَّلْتُ	اِنِّيْ	لَا تُنْظِرُوْنِ (55)	ثُمَّ	جَمِيْعًا	فَكِيْدُوْنِيْ
तवक्कल किया मैंने	बेशक मैं	ना तुम मोहलत दो मुझे	फिर	सब के सब	पस चाल चलो मेरे ख़िलाफ़

اٰخِذٌۢ	هُوَ	اِلَّا	مِنْ دَآبَّةٍ	مَا	وَرَبِّكُمْ ؕ	رَبِّيْ	عَلَى اللّٰهِ
पकड़ने वाला है	वो	मगर	कोई जानदार	नहीं	और रब है तुम्हारा	जो रब है मेरा	अल्लाह पर

تَوَلَّوْا	فَاِنْ	مُّسْتَقِيْمٍ (56)	عَلٰى صِرَاطٍ	رَبِّيْ	اِنَّ	بِنَاصِيَتِهَا ؕ
तुम मुंह फेरते हो	फिर अगर	सीधे के है	ऊपर रास्ते	रब मेरा	बेशक	पेशानी उसकी

وَيَسْتَخْلِفُ	اِلَيْكُمْ ؕ	بِهٖٓ	اُرْسِلْتُ	مَّآ	اَبْلَغْتُكُمْ	فَقَدْ
और जानशीन बनाएगा	तरफ़ तुम्हारे	साथ उसके	मैं भेजा गया हूं	वो जो	पहुंचा दिया मैंने तुम्हें	तो तहक़ीक़

رَبِّيْ	اِنَّ	شَيْـًٔا ؕ	تَضُرُّوْنَهٗ	وَلَا	غَيْرَكُمْ ۚ	قَوْمًا	رَبِّيْ
रब मेरा	बेशक	कुछ भी	तुम नुक़्सान दे सकोगे उसे	और नहीं	तुम्हारे इलावा	एक क़ौम को	रब मेरा

هُوْدًا	نَجَّيْنَا	اَمْرُنَا	جَآءَ	وَلَمَّا	حَفِيْظٌ (57)	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى
हूद को	निजात दी हमने	फ़ैसला हमारा	आ गया	और जब	ख़ूब निगरान है	चीज़ के	हर	ऊपर

وَنَجَّيْنٰهُمْ	مِّنَّا ۚ	بِرَحْمَةٍ	مَعَهٗ	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ
और निजात दी हमने उन्हें	हमारी तरफ़ से	साथ रहमत के	साथ उसके	ईमान लाए	और उनको जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبِّهِمْ	بِاٰيٰتِ	جَحَدُوْا	عَادٌ ۙ قف	وَتِلْكَ	غَلِيْظٍ (58)	مِّنْ عَذَابٍ
अपने रब की	आयात का	उन्होंने इंकार किया	आद	और ये थे	सख़्त	अज़ाब से

عَنِيْدٍ (59)	جَبَّارٍ	كُلِّ	اَمْرَ	وَاتَّبَعُوْٓا	رُسُلَهٗ	وَعَصَوْا
ज़िद्दी के	सरकश	हर	हुक्म की	और उन्होंने पैरवी की	उसके रसूलों की	और उन्होंने नाफ़रमानी की

اِنَّ	اَلَآ	الْقِيٰمَةِ ؕ	وَّيَوْمَ	لَعْنَةً	فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا	وَاُتْبِعُوْا
बेशक	ख़बरदार	क़यामत के (भी)	और दिन	लानत	इस दुनिया में	और उनके पीछे लगा दी गई

ع 11 5 5

هُوْدٍ (60) ع	قَوْمِ	لِّعَادٍ	بُعْدًا	اَلَا	رَبَّهُمْ ؕ	كَفَرُوْا	عَادًا
हूद की	जो क़ौम थी	आद के लिए	दूरी है	ख़बरदार	अपने रब का	कुफ़्र किया	आद ने

وقف لازم

اللّٰهَ	اعْبُدُوا	يٰقَوْمِ	قَالَ	صٰلِحًا ۘ	اَخَاهُمْ	ثَمُوْدَ	وَاِلٰى
अल्लाह की	इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उसने कहा	सालेह को (भेजा)	उनके भाई	समूद के	और तरफ़

مِّنَ الْاَرْضِ	اَنْشَاَكُمْ	هُوَ	غَيْرُهٗ ؕ	مِّنْ اِلٰهٍ	لَكُمْ	مَا
ज़मीन में से	जिसने पैदा किया तुम्हें	वही है	सिवाए उसके	कोई इलाह (बरहक़)	तुम्हारे लिए	नहीं

اِنَّ	اِلَيْهِ ؕ	تُوْبُوْٓا	ثُمَّ	فَاسْتَغْفِرُوْهُ	فِيْهَا	وَاسْتَعْمَرَكُمْ
बेशक	तरफ़ उसके	तौबा करो	फिर	पस बख़्शिश मांगो उससे	उसमें	और जिसने आबाद किया तुम्हें

كُنْتَ	قَدْ	يٰصٰلِحُ	قَالُوْا	مُّجِيْبٌ (61)	قَرِيْبٌ	رَبِّيْ
था तू	तहक़ीक़	ऐ सालेह	उन्होंने कहा	जवाब देने वाला है	बहुत क़रीब है	मेरा रब

مَا	نَّعْبُدَ	اَنْ	اَتَنْهٰىنَآ	هٰذَآ	قَبْلَ	مَرْجُوًّا	فِيْنَا
जिसकी	हम इबादत करें	कि	क्या तू रोकता है हमें	इसके	क़ब्ल	जिससे उम्मीद रखी गई	हमारे दर्मियान

اِلَيْهِ	تَدْعُوْنَآ	مِّمَّا	لَفِيْ شَكٍّ	وَاِنَّنَا	اٰبَآؤُنَا	يَعْبُدُ
तरफ़ उसके	तुम बुलाते हो हमें	उससे जो	अलबत्ता शक में हैं	और बेशक हम	आबा ओ अजदाद हमारे	इबादत करते थे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُرِيبٍ (62)	قَالَ	يٰقَوْمِ	أَرَءَيْتُمْ	إِنْ	كُنْتُ	عَلٰى بَيِّنَةٍ
जो बेचैन कर देने वाला है	उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	क्या देखा तुमने	अगर	हूं मैं	एक वाज़ेह दलील पर

مِّنْ رَّبِّىْ	وَاٰتٰىنِىْ	مِنْهُ	رَحْمَةً	فَمَنْ	يَّنْصُرُنِىْ	مِنَ اللّٰهِ
अपने रब की तरफ़ से	और उसने दी हो मुझे	अपनी तरफ़ से	रहमत	तो कौन	मदद करेगा मेरी	अल्लाह से (बचाने में)

إِنْ	عَصَيْتُهٗ ۣ قف	فَمَا	تَزِيْدُوْنَنِىْ	غَيْرَ	تَخْسِيْرٍ (63)	وَيٰقَوْمِ
अगर	नाफ़रमानी की मैंने उसकी	तो नहीं	तुम ज़्यादा करोगे मुझे	सिवाए	ख़सारा देने के	और ऐ मेरी क़ौम

هٰذِهٖ	نَاقَةُ	اللّٰهِ	لَكُمْ	اٰيَةً	فَذَرُوْهَا	تَأْكُلْ	فِىْٓ اَرْضِ
ये	ऊंटनी है	अल्लाह की	तुम्हारे लिए	एक निशानी	पस छोड़ दो उसे	वो खाती फिरे	ज़मीन में

اللّٰهِ	وَلَا	تَمَسُّوْهَا	بِسُوْٓءٍ	فَيَأْخُذَكُمْ	عَذَابٌ	قَرِيْبٌ (64)
अल्लाह की	और ना	तुम छुओ उसे	साथ बुराई के	पस पकड़ लेगा तुम्हें	अज़ाब	क़रीबी

فَعَقَرُوْهَا	فَقَالَ	تَمَتَّعُوْا	فِىْ دَارِكُمْ	ثَلٰثَةَ	اَيَّامٍ ط	ذٰلِكَ
तो उन्होंने कूंचें काट डालीं उसकी	तो उसने कहा	तुम फ़ायदा उठाओ	अपने घरों में	तीन	दिन	ये

وَعْدٌ	غَيْرُ	مَكْذُوْبٍ (65)	فَلَمَّا	جَآءَ	اَمْرُنَا	نَجَّيْنَا	صٰلِحًا
वादा है	ना	झूठा होने वाला	तो जब	आ गया	हुक्म हमारा	निजात दी हमने	सालेह को

وَّالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مَعَهٗ	بِرَحْمَةٍ	مِّنَّا	وَمِنْ خِزْىِ	يَوْمِئِذٍ ط
और उनको जो	ईमान लाए	साथ उसके	साथ रहमत के	हमारी तरफ़ से	और रुस्वाई से (भी)	उस दिन की

اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	الْقَوِىُّ	الْعَزِيْزُ (66)	وَاَخَذَ	الَّذِيْنَ
बेशक	रब आपका	वो ही है	बहुत क़ुव्वत वाला	बहुत ज़बरदस्त	और पकड़ लिया	उन्हें जिन्होंने

ظَلَمُوا	الصَّيْحَةُ	فَاَصْبَحُوْا	فِىْ دِيَارِهِمْ	جٰثِمِيْنَ (67) لا	كَاَنْ	لَّمْ
ज़ुल्म किया	चिंघाड़ ने	तो सुबह की उन्होंने	अपने घरों में	औंधे मुंह गिरने वाले होकर	गोया कि	नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 6 8 6

يَغْنَوْا	فِيْهَا ؕ	اَلَآ	اِنَّ	ثَمُوْدَاۡ	كَفَرُوْا	رَبَّهُمْ ؕ	اَلَا	بُعْدًا
वो बसे थे	उसमें	ख़बरदार	बेशक	समूद ने	कुफ़्र किया	अपने रब से	ख़बरदार	दूरी है

لِّثَمُوْدَ ﴿68﴾ ع	وَلَقَدْ	جَآءَتْ	رُسُلُنَآ	اِبْرٰهِيْمَ	بِالْبُشْرٰى
समूद के लिए	और अलबत्ता तहक़ीक़	आए	हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	इब्राहीम के पास	साथ ख़ुशख़बरी के

قَالُوْا	سَلٰمًا ؕ	قَالَ	سَلٰمٌ	فَمَا	لَبِثَ	اَنْ	جَآءَ	بِعِجْلٍ
उन्होंने कहा	सलाम हो	उसने कहा	सलाम हो	पस ना	वो ठहरा	मगर	वो ले आया	एक बछड़ा

حَنِيْذٍ ﴿69﴾	فَلَمَّا	رَاٰۤ	اَيْدِيَهُمْ	لَا تَصِلُ	اِلَيْهِ	نَكِرَهُمْ
भुना हुआ	फिर जब	उसने देखा	हाथ उनके	नहीं वो पहुंचते	तरफ़ उसके	उसने अजनबी समझा उन्हें

وَاَوْجَسَ	مِنْهُمْ	خِيْفَةً ؕ	قَالُوْا	لَا تَخَفْ	اِنَّآ	اُرْسِلْنَآ
और उसने महसूस किया	उनसे	ख़ौफ़	उन्होंने कहा	ना तुम डरो	बेशक हम	भेजे गए हैं हम

اِلٰى قَوْمِ	لُوْطٍ ﴿70﴾ ؕ	وَامْرَاَتُهٗ	قَآئِمَةٌ	فَضَحِكَتْ	فَبَشَّرْنٰهَا
तरफ़ क़ौम	लूत के	और बीवी उसकी	खड़ी थी	तो वो हंस दी	पस ख़ुशख़बरी दी हमने उसे

بِاِسْحٰقَ ۙ	وَمِنْ وَّرَآءِ	اِسْحٰقَ	يَعْقُوْبَ ﴿71﴾	قَالَتْ	يٰوَيْلَتٰٓى
इसहाक़ की	और पीछे/बाद	इसहाक़ के	याक़ूब की	वो कहने लगी	ऐ ख़राबी मेरी

ءَاَلِدُ	وَاَنَا	عَجُوْزٌ	وَّهٰذَا	بَعْلِىْ	شَيْخًا ؕ	اِنَّ	هٰذَا
क्या मैं जन्म दूंगी	जबकि मैं	बुढ़िया हूं	और ये	शौहर मेरा	बूढ़ा है	बेशक	ये तो

لَشَىْءٌ	عَجِيْبٌ ﴿72﴾	قَالُوْۤا	اَتَعْجَبِيْنَ	مِنْ اَمْرِ	اللّٰهِ	رَحْمَتُ
अलबत्ता चीज़ है	अजीब	उन्होंने कहा	क्या तू ताअज्जुब करती है	हुक्म से	अल्लाह के	रहमत हो

اللّٰهِ	وَبَرَكٰتُهٗ	عَلَيْكُمْ	اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ	اِنَّهٗ	حَمِيْدٌ	مَّجِيْدٌ ﴿73﴾
अल्लाह की	और बरकतें हों उसकी	तुम पर	ऐ अहले बैत	बेशक वो	बहुत तारीफ़ वाला है	बड़ी शान वाला है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْبُشْرٰى	وَجَآءَتْهُ	الرَّوْعُ	عَنْ اِبْرٰهِيْمَ	ذَهَبَ	فَلَمَّا
ख़ुशख़बरी	और आ गई उसके पास	ख़ौफ़	इब्राहीम से	चला गया	तो जब

اَوَّاهٌ	لَحَلِيْمٌ	اِبْرٰهِيْمَ	اِنَّ	فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ؕ (74)	يُجَادِلُنَا
बहुत आह व ज़ारी करने वाला	बिलाशुबह निहायत बुर्दबार	इब्राहीम	बेशक	क़ौमे लूत के बारे में	वो झगड़ने लगा हमसे

اَمْرُ	جَآءَ	قَدْ	اِنَّهٗ	عَنْ هٰذَا ۚ	اَعْرِضْ	يٰۤاِبْرٰهِيْمُ	مُّنِيْبٌ (75)
हुक्म	आ चुका	तहक़ीक़	बेशक वो	इस (बात) से	ऐराज़ करो	ऐ इब्राहीम	रुजुअ करने वाला था

جَآءَتْ	وَلَمَّا	مَرْدُوْدٍ (76)	غَيْرُ	عَذَابٌ	اٰتِيْهِمْ	وَاِنَّهُمْ	رَبِّكَ ۚ
आए	और जब	फेरा जाने वाला	ना	अज़ाब	आने वाला है उन पर	और बेशक वो	तेरे रब का

ذَرْعًا	بِهِمْ	وَضَاقَ	بِهِمْ	سِیْٓءَ	لُوْطًا	رُسُلُنَا
दिल में	उनके बारे में	और वो तंग हुआ	उनके बारे में	वो ग़मगीन हुआ	लूत के पास	हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)

يُهْرَعُوْنَ	قَوْمُهٗ	وَجَآءَهٗ	عَصِيْبٌ (77)	يَوْمٌ	هٰذَا	وَّقَالَ
तेज़ दौड़ते हुए	उसकी क़ौम (के लोग)	और आए उसके पास	बड़ा सख़्त	दिन है	ये	और कहा

هٰۤؤُلَآءِ	يٰقَوْمِ	قَالَ	السَّيِّاٰتِ ؕ	يَعْمَلُوْنَ	كَانُوْا	وَمِنْ قَبْلُ	اِلَيْهِ ؕ
ये हैं	ऐ मेरी क़ौम	उसने कहा	बुरे	वो अमल करते	थे वो	और इससे पहले	तरफ़ उसके

تُخْزُوْنِ	وَلَا	اللّٰهَ	فَاتَّقُوا	لَكُمْ	اَطْهَرُ	هُنَّ	بَنَاتِيْ
तुम रुस्वा करो मुझे	और ना	अल्लाह से	पस डरो	तुम्हारे लिए	ज़्यादा पाकीज़ा हैं	ये	बेटियां मेरी

لَقَدْ	قَالُوْا	رَّشِيْدٌ (78)	رَجُلٌ	مِّنْكُمْ	اَلَيْسَ	فِيْ ضَيْفِيْ ؕ
अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने कहा	समझदार	कोई आदमी	तुम में	क्या नहीं है	मेरे मेहमानों में

مَا	لَتَعْلَمُ	وَاِنَّكَ	مِنْ حَقٍّ ۚ	فِيْ بَنٰتِكَ	لَنَا	مَا	عَلِمْتَ
जो	अलबत्ता तू जानता है	और बेशक तू	कोई हक़ (दिलचस्पी)	तेरी बेटियों में	हमारे लिए	नहीं	तू जानता है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نُرِيْدُ (79)	قَالَ	لَوْ	اَنَّ	لِيْ	بِكُمْ	قُوَّةً	اَوْ	اٰوِيْٓ
हम चाहते हैं	उसने कहा	काश	कि बेशक	मेरे लिए (होती)	तुम पर	कोई क़ुव्वत	या	मैं पनाह ले सकता

اِلٰى رُكْنٍ	شَدِيْدٍ (80)	قَالُوْا	يٰلُوْطُ	اِنَّا	رُسُلُ	رَبِّكَ
तरफ़ सहारे	मज़बूत के	उन्होंने कहा	ऐ लूत	बेशक हम	भेजे हुए हैं	तेरे रब के

لَنْ	يَّصِلُوْٓا	اِلَيْكَ	فَاَسْرِ	بِاَهْلِكَ	بِقِطْعٍ	مِّنَ الَّيْلِ	وَلَا
हरगिज़ ना	वो पहुंच सकेंगे	तुझ तक	पस ले चल	अपने घर वालों को	एक टुकड़े में	रात के	और ना

يَلْتَفِتْ	مِنْكُمْ	اَحَدٌ	اِلَّا	امْرَاَتَكَ ؕ	اِنَّهٗ	مُصِيْبُهَا	مَآ
पलट कर देखे	तुम में से	कोई एक	मगर	बीवी तुम्हारी	बेशक वो	पहुंचने वाला है उसे (भी)	जो

اَصَابَهُمْ ؕ	اِنَّ	مَوْعِدَهُمُ	الصُّبْحُ ؕ	اَلَيْسَ	الصُّبْحُ	بِقَرِيْبٍ (81)
पहुंचेगा उन्हें	बेशक	उनके वादे का वक़्त	सुबह है	क्या नहीं है	सुबह	क़रीब ही

فَلَمَّا	جَآءَ	اَمْرُنَا	جَعَلْنَا	عَالِيَهَا	سَافِلَهَا	وَاَمْطَرْنَا
तो जब	आ गया	हुक्म हमारा	कर दिया हमने	ऊपर वाला उसका	निचला उसका	और बरसाए हमने

عَلَيْهَا	حِجَارَةً	مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ	مَّنْضُوْدٍ ۙ (82)	مُّسَوَّمَةً	عِنْدَ
उस पर	पत्थर	कंकर में से	तह-ब-तह	निशानज़दा	पास से

رَبِّكَ ؕ	وَمَا	هِيَ	مِنَ الظّٰلِمِيْنَ	بِبَعِيْدٍ (83) ع	وَاِلٰى	مَدْيَنَ
आपके रब के	और नहीं	वो	ज़ालिमों से	कुछ दूर	और तरफ़	मदयन के

ع 15 النصف 7 7

اَخَاهُمْ	شُعَيْبًا ؕ	قَالَ	يٰقَوْمِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	مَا	لَكُمْ
उनके भाई	शुऐब को (भेजा)	उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो	अल्लाह की	नहीं	तुम्हारे लिए

مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ؕ	وَلَا	تَنْقُصُوا	الْمِكْيَالَ	وَالْمِيْزَانَ	اِنِّيْٓ
कोई इलाह (बरहक़)	सिवाए उसके	और ना	तुम कम करो	नाप	और तौल	बेशक मैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوۡمٍ مُّحِيۡطٍ (84)	عَذَابَ	عَلَيۡكُمۡ	اَخَافُ	وَاِنِّىۡۤ	بِخَيۡرٍ	اَرٰٮكُمۡ
घेर लेने वाले दिन के	अज़ाब से	तुम पर	मैं डरता हूं	और बेशक मैं	अच्छी हालत में	मैं देखता हूं तुम्हें

تَبۡخَسُوا	وَلَا	بِالۡقِسۡطِ	وَالۡمِيۡزَانَ	الۡمِكۡيَالَ	اَوۡفُوا	وَيٰقَوۡمِ
तुम कम दो	और ना	साथ इंसाफ़ के	और तौल	नाप	पूरा करो	और ऐ मेरी क़ौम

مُفۡسِدِيۡنَ (85)	فِى الۡاَرۡضِ	تَعۡثَوۡا	وَلَا	اَشۡيَآءَهُمۡ	النَّاسَ
मुफ़सिद बन कर	ज़मीन में	तुम फ़साद करो	और ना	चीज़ें उनकी	लोगों को

اَنَا	وَمَآ	مُّؤۡمِنِيۡنَ ۚ	كُنۡتُمۡ	اِنۡ	لَّكُمۡ	خَيۡرٌ	اللّٰهِ	بَقِيَّتُ
मैं	और नहीं	ईमान लाने वाले	हो तुम	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर है	अल्लाह का	बाक़ी मांदा

اَنۡ	تَاۡمُرُكَ	اَصَلٰوتُكَ	يٰشُعَيۡبُ	قَالُوۡا	بِحَفِيۡظٍ (86)	عَلَيۡكُمۡ
कि	हुक्म देती है तुझे	क्या नमाज़ तेरी	ऐ शुऐब	उन्होंने कहा	कोई निगहबान	तुम पर

فِىۡۤ اَمۡوَالِنَا	نَّفۡعَلَ	اَنۡ	اَوۡ	اٰبَآؤُنَاۤ	يَعۡبُدُ	مَا	نَّتۡرُكَ
अपने मालों में	(ना) हम करें	ये कि	या	आबा ओ अजदाद हमारे	इबादत करते थे	उन्हें जिनकी	हम छोड़ दें

يٰقَوۡمِ	قَالَ	الرَّشِيۡدُ (87)	الۡحَلِيۡمُ	لَاَنۡتَ	اِنَّكَ	نَشٰٓؤُا ؕ	مَا
ऐ मेरी क़ौम	उसने कहा	समझदार	निहायत बुर्दबार	अलबत्ता तू ही है	बेशक तू	हम चाहें	जो

مِنۡهُ	وَرَزَقَنِىۡ	مِّنۡ رَّبِّىۡ	عَلٰى بَيِّنَةٍ	كُنۡتُ	اِنۡ	اَرَءَيۡتُمۡ
अपने पास से	और उसने दिया हो मुझे	अपने रब की तरफ़ से	एक वाज़ेह दलील पर	हूं मैं	अगर	क्या देखा तुमने

اَنۡهٰٮكُمۡ	مَاۤ	اِلٰى	اُخَالِفَكُمۡ	اَنۡ	اُرِيۡدُ	وَمَاۤ	حَسَنًا ؕ	رِزۡقًا
मैं रोकता हूं तुम्हें	उसके जो	तरफ़	मैं मुख़ालिफ़त तुम्हारी करूं	कि	मैं चाहता	और नहीं	अच्छा	रिज़्क़

وَمَا	اسۡتَطَعۡتُ ؕ	مَا	الۡاِصۡلَاحَ	اِلَّا	اُرِيۡدُ	اِنۡ	عَنۡهُ ؕ
और नहीं	मैं इस्तिताअत रखता हूं	जितनी	इस्लाह	मगर	मैं चाहता	नहीं	जिस से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَوْفِيْقِيْٓ	اِلَّا	بِاللّٰهِ ؕ	عَلَيْهِ	تَوَكَّلْتُ	وَاِلَيْهِ	اُنِيْبُ (88)
तौफ़ीक़ मेरी	मगर	साथ अल्लाह के	उसी पर	तवक्कल किया मैंने	और उसी की तरफ़	मैं रुजूअ करता हूं

وَيٰقَوْمِ	لَا يَجْرِمَنَّكُمْ	شِقَاقِيْٓ	اَنْ	يُّصِيْبَكُمْ	مِّثْلُ	مَآ
और ऐ मेरी क़ौम	हरगिज़ ना आमादा करे तुम्हें	ज़िद/मुख़ालिफ़त मेरी	कि	पहुंचे तुम्हें (भी)	मानिंद इसके	जो

اَصَابَ	قَوْمَ	نُوْحٍ	اَوْ	قَوْمَ	هُوْدٍ	اَوْ	قَوْمَ	صٰلِحٍ ؕ	وَمَا
पहुंचा	क़ौमे	नूह को	या	क़ौमे	हूद को	या	क़ौमे	सालेह को	और नहीं

قَوْمُ	لُوْطٍ	مِّنْكُمْ	بِبَعِيْدٍ (89)	وَاسْتَغْفِرُوْا	رَبَّكُمْ	ثُمَّ	تُوْبُوْٓا
क़ौमे	लूत	तुमसे	कुछ दूर	और बख़्शिश मांगो	अपने रब से	फिर	तौबा करो

اِلَيْهِ ؕ	اِنَّ	رَبِّيْ	رَحِيْمٌ	وَّدُوْدٌ (90)	قَالُوْا	يٰشُعَيْبُ	مَا
तरफ़ उसके	बेशक	मेरा रब	निहायत रहम करने वाला है	बहुत मोहब्बत करने वाला है	उन्होंने कहा	ऐ शुऐब	नहीं

نَفْقَهُ	كَثِيْرًا	مِّمَّا	تَقُوْلُ	وَاِنَّا	لَنَرٰىكَ	فِيْنَا	ضَعِيْفًا ج
हम समझ पाते	बहुत सा	उसमें से जो	तुम कहते हो	और बेशक हम	अलबत्ता हम देखते हैं तुझे	अपने में	बहुत कमज़ोर

وَلَوْلَا	رَهْطُكَ	لَرَجَمْنٰكَ ز	وَمَآ	اَنْتَ	عَلَيْنَا	بِعَزِيْزٍ (91)
और अगर ना होता	क़बीला तेरा	अलबत्ता संगसार कर देते हम तुझे	और नहीं	तू	हम पर	कुछ ग़ालिब

قَالَ	يٰقَوْمِ	اَرَهْطِيْٓ	اَعَزُّ	عَلَيْكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَاتَّخَذْتُمُوْهُ
उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	क्या क़बीला मेरा	ज़्यादा ज़ोर वाला है	तुम पर	अल्लाह से	और बना लिया तुमने उसे

وَرَآءَكُمْ	ظِهْرِيًّا ؕ	اِنَّ	رَبِّيْ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	مُحِيْطٌ (92)
पीछे अपनी	पुश्त के	बेशक	मेरा रब	उसे जो	तुम अमल करते हो	घेरे हुए है

وَيٰقَوْمِ	اعْمَلُوْا	عَلٰى مَكَانَتِكُمْ	اِنِّيْ	عَامِلٌ ؕ	سَوْفَ
और ऐ मेरी क़ौम	अमल करो	अपनी जगह पर	बेशक मैं	अमल करने वाला हूं	अनक़रीब

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

هُوَ	وَمَنْ	يُّخْزِيْهِ	عَذَابٌ	يَّاْتِيْهِ	مَنْ	تَعْلَمُوْنَ ۙ
वो जो	और कौन है	जो रुस्वा कर देगा उसे	अज़ाब	आता है उस पर	कौन है कि	तुम जान लोगे

جَآءَ	وَلَمَّا	رَقِيْبٌ (93)	مَعَكُمْ	اِنِّيْ	وَارْتَقِبُوْٓا	كَاذِبٌ ؕ
आ गया	और जब	इंतिज़ार करने वाला हूं	साथ तुम्हारे	बेशक मैं	और इंतिज़ार करो	झूठा है

بِرَحْمَةٍ	مَعَهٗ	اٰمَنُوْا	وَّالَّذِيْنَ	شُعَيْبًا	نَجَّيْنَا	اَمْرُنَا
साथ रहमत के	साथ उसके	ईमान लाए	और उनको जो	शुऐब को	निजात दी हमने	फ़ैसला हमारा

فَاَصْبَحُوْا	الصَّيْحَةُ	ظَلَمُوا	الَّذِيْنَ	وَاَخَذَتِ	مِّنَّا
तो उन्होंने सुबह की	चिंघाड़ ने	ज़ुल्म किया था	उनको जिन्होंने	और पकड़ लिया	अपनी तरफ़ से

اَلَآ	فِيْهَا ؕ	يَغْنَوْا	لَّمْ	كَاَنْ	جٰثِمِيْنَ (94) ۙ	فِيْ دِيَارِهِمْ
ख़बरदार	उनमें	वो बसे थे	ना	गोया कि	औंधे मुंह पड़े हुए	अपने घरों में

اَرْسَلْنَا	وَلَقَدْ	ثَمُوْدُ (95) ع	بَعِدَتْ	كَمَا	لِّمَدْيَنَ	بُعْدًا
भेजा हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	समूद	दूर हुए	जैसा कि	मदयन के लिए	दूरी है

ع 12 8 8

وَمَلَا۟ئِهٖ	اِلٰى فِرْعَوْنَ	مُّبِيْنٍ (96) ۙ	وَسُلْطٰنٍ	بِاٰيٰتِنَا	مُوْسٰى
और उसके सरदारों के	तरफ़ फ़िरऔन	वाज़ेह के	और दलील	साथ अपनी आयात के	मूसा को

بِرَشِيْدٍ (97)	فِرْعَوْنَ	اَمْرُ	وَمَآ	فِرْعَوْنَ ۚ	اَمْرَ	فَاتَّبَعُوْٓا
भलाई वाला	फ़िरऔन का	हुक्म	और ना (था)	फ़िरऔन के	हुक्म की	तो उन्होंने पैरवी की

وَبِئْسَ	النَّارَ ؕ	فَاَوْرَدَهُمُ	الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	قَوْمَهٗ	يَقْدُمُ
और कितनी बुरी है	आग पर	फिर ले आएगा उन्हें	क़यामत के	दिन	अपनी क़ौम के	वो आगे होगा

الْقِيٰمَةِ ؕ	وَّيَوْمَ	لَعْنَةً	فِيْ هٰذِهٖ	وَاُتْبِعُوْا	الْمَوْرُوْدُ (98)	الْوِرْدُ
क़यामत के (भी)	और दिन	लानत	इस (दुनिया) में	और वो पीछे लगाए गए	जो वारिद होने की जगह है	घाट

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نَقُصُّهٗ	الْقُرٰى	مِنْ اَنْۢبَآءِ	ذٰلِكَ	الْمَرْفُوْدُ (99)	الرِّفْدُ	بِئْسَ
हम बयान करते हैं उन्हें	बस्तियों की	कुछ ख़बरें हैं	ये	जो दिया गया	इनाम	कितना बुरा है

وَلٰكِنْ	ظَلَمْنٰهُمْ	وَمَا	وَّحَصِيْدٌ (100)	قَآئِمٌ	مِنْهَا	عَلَيْكَ
और लेकिन	ज़ुल्म किया हमने उन पर	और नहीं	और कुछ जड़ से कट चुकी हैं	कुछ क़ायम हैं	उनमें से	आप पर

الَّتِىْ	اٰلِهَتُهُمُ	عَنْهُمْ	اَغْنَتْ	فَمَآ	اَنْفُسَهُمْ	ظَلَمُوْٓا
जिन्हें	इलाह उनके	उन्हें	काम आए	तो ना	अपने नफ़्सों पर	उन्होंने ज़ुल्म किया

رَبِّكَ ؕ	اَمْرُ	جَآءَ	لَّمَّا	مِنْ شَیْءٍ	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	يَدْعُوْنَ
आपके रब का	हुक्म	आ गया	जब	कुछ भी	अल्लाह के	सिवाए	वो पुकारते थे

رَبِّكَ	اَخْذُ	وَكَذٰلِكَ	تَتْبِيْبٍ (101)	غَيْرَ	زَادُوْهُمْ	وَمَا
आपके रब की	पकड़ है	और इसी तरह	हलाकत के	सिवाए	उन्होंने ज़्यादा किया उन्हें	और नहीं

اَلِيْمٌ	اَخْذَهٗۤ	اِنَّ	ظَالِمَةٌ ؕ	وَهِىَ	الْقُرٰى	اَخَذَ	اِذَآ
दर्दनाक है	पकड़ना उसका	बेशक	ज़ालिम होती हैं	जब कि वो	बस्तियों को	वो पकड़ता है	जब

عَذَابَ	خَافَ	لِّمَنْ	لَاٰيَةً	فِىْ ذٰلِكَ	اِنَّ	شَدِيْدٌ (102)
अज़ाब से	डरे	उसके लिए जो	अलबत्ता एक निशानी है	इसमें	बेशक	शदीद है

يَوْمٌ	وَذٰلِكَ	النَّاسُ	لَّهُ	مَّجْمُوْعٌ ۙ	يَوْمٌ	ذٰلِكَ	الْاٰخِرَةِ ؕ
दिन	और ये है	लोग	इसके लिए	जमा किए जाएंगे	दिन	ये है	आख़िरत के

يَوْمَ	مَّعْدُوْدٍ (104) ؕ	لِاَجَلٍ	اِلَّا	نُؤَخِّرُهٗۤ	وَمَا	مَّشْهُوْدٌ (103)
जिस दिन	गिनी चुनी	एक मुद्दत के लिए	मगर	हम मुअख़्ख़र कर रहे उसे	और नहीं	हाज़िरी का

شَقِىٌّ	فَمِنْهُمْ	بِاِذْنِهٖ ۚ	اِلَّا	نَفْسٌ	لَا تَكَلَّمُ	يَاْتِ
बदबख़्त होगा	तो इनमें से कोई	उसके इज़्न से	मगर	कोई नफ़्स	ना कलाम करेगा	वो आ जाएगी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيهَا	لَهُمْ	فَفِي النَّارِ	شَقُوْا	الَّذِيْنَ	فَاَمَّا	وَّسَعِيْدٌ ﴿105﴾
उसमें	उनके लिए	तो आग में होंगे	बदबख़्त हुए	वो लोग जो	तो रहे	और कोई नेकबख़्त होगा

السَّمٰوٰتُ	مَادَامَتِ	فِيهَا	خٰلِدِيْنَ	وَّشَهِيْقٌ ﴿106﴾ لا	زَفِيْرٌ
आसमान	जब तक क़ायम हैं	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और दहाड़ना होगा	चीख़ व पुकार होगी

فَعَّالٌ	رَبَّكَ	اِنَّ	رَبُّكَ ط	شَآءَ	مَا	اِلَّا	وَالْاَرْضُ
कर गुज़रने वाला है	रब आपका	बेशक	रब आपका	चाहे	जो	मगर	और ज़मीन

خٰلِدِيْنَ	فَفِي الْجَنَّةِ	سُعِدُوْا	الَّذِيْنَ	وَاَمَّا	يُرِيْدُ ﴿107﴾	لِّمَا
हमेशा रहने वाले हैं	तो जन्नत में होंगे	नेकबख़्त हुए	वो लोग जो	और रहे	वो चाहता है	उसे जो

شَآءَ	مَا	اِلَّا	وَالْاَرْضُ	السَّمٰوٰتُ	مَادَامَتِ	فِيهَا
चाहे	जो	मगर	और ज़मीन	आसमान	जब तक क़ायम है	इसमें

فِيْ مِرْيَةٍ	تَكُ	فَلَا	مَجْذُوْذٍ ﴿108﴾	غَيْرَ	عَطَآءً	رَبُّكَ ط
शक में	हों आप	पस ना	ख़त्म होने वाली	ना	बख़्शिश है	रब आपका

يَعْبُدُ	كَمَا	اِلَّا	يَعْبُدُوْنَ	مَا	هٰٓؤُلَآءِ ط	يَعْبُدُ	مِّمَّا
इबादत करते थे	जैसा कि	मगर	वो इबादत करते	नहीं	ये लोग	इबादत करते हैं	उससे जिसकी

غَيْرَ	نَصِيْبَهُمْ	لَمُوَفُّوْهُمْ	وَاِنَّا	مِّنْ قَبْلُ ط	اٰبَآؤُهُمْ
बग़ैर	हिस्सा उनका	अलबत्ता पूरा-पूरा देने वाले हैं उन्हें	और बेशक हम	इससे पहले	आबा ओ अजदाद उनके

فِيْهِ ط	فَاخْتُلِفَ	الْكِتٰبَ	مُوْسَى	اٰتَيْنَا	وَلَقَدْ	مَنْقُوْصٍ ﴿109﴾ ع	ع 14/9 9
उसमें	पस इख़्तिलाफ़ किया गया	किताब	मूसा को	दी हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	कमी किए	

بَيْنَهُمْ ط	لَقُضِيَ	مِنْ رَّبِّكَ	سَبَقَتْ	كَلِمَةٌ	وَلَوْلَا
दर्मियान उनके	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	आपके रब की तरफ़ से	जो गुज़र चुकी	एक बात	और अगर ना होती

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَّمَّا	كُلًّا	وَاِنَّ	مُرِيْبٍ (110)	مِّنْهُ	لَفِيْ شَكٍّ	وَاِنَّهُمْ
जब (वक़्त आएगा)	हर एक को	और बेशक	बेचैन करने वाले	उसकी तरफ़ से	अलबत्ता शक में हैं	और बेशक वो

يَعْمَلُوْنَ	بِمَا	اِنَّهٗ	اَعْمَالَهُمْ ط	رَبُّكَ	لَيُوَفِّيَنَّهُمْ
वो अमल करते हैं	उससे जो	बेशक वो	उनके आमाल (का बदला)	रब आपका	अलबत्ता ज़रूर पूरा-पूरा देगा उन्हें

مَعَكَ	تَابَ	وَمَنْ	اُمِرْتَ	كَمَآ	فَاسْتَقِمْ	خَبِيْرٌ (111)
आपके साथ	तौबा करे	और वो (भी) जो	हुक्म दिए गए आप	जैसा कि	पस क़ायम रहिए	ख़ूब बाख़बर है

وَلَا	بَصِيْرٌ (112)	تَعْمَلُوْنَ	بِمَا	اِنَّهٗ	تَطْغَوْا ط	وَلَا
और ना	ख़ूब देखने वाला है	तुम अमल करते हो	उसे जो	बेशक वो	तुम सरकशी करो	और ना

وَمَا	النَّارُ لا	فَتَمَسَّكُمُ	ظَلَمُوْا	اِلَى الَّذِيْنَ	تَرْكَنُوْٓا
और नहीं (होगा)	आग	वरना छू लेगी तुम्हें	ज़ुल्म किया	तरफ़ उनके जिन्होंने	तुम झुको/माइल हो

وَاَقِمِ	لَا تُنْصَرُوْنَ (113)	ثُمَّ	مِنْ اَوْلِيَآءَ	اللّٰهِ	مِّنْ دُوْنِ	لَكُمْ
और क़ायम कीजिए	ना तुम मदद दिए जाओगे	फिर	कोई दोस्त	अल्लाह के	सिवाए	तुम्हारे लिए

الْحَسَنٰتِ	اِنَّ	مِّنَ الَّيْلِ ط	وَزُلَفًا	النَّهَارِ	طَرَفَيِ	الصَّلٰوةَ
नेकियां	बेशक	रात में से	और कुछ हिस्सा	दिन के	दोनो किनारों पर	नमाज़

فَاِنَّ	وَاصْبِرْ	لِلذّٰكِرِيْنَ (114) ج	ذِكْرٰى	ذٰلِكَ	السَّيِّاٰتِ ط	يُذْهِبْنَ
पस बेशक	और सब्र कीजिए	याद रखने वालों के लिए	याददिहानी है	ये	बुराइयों को	ले जाती हैं

مِنَ الْقُرُوْنِ	كَانَ	فَلَوْلَا	الْمُحْسِنِيْنَ (115)	اَجْرَ	لَا يُضِيْعُ	اللّٰهَ
उन उम्मतों में से	हुए	फिर क्यों ना	एहसान करने वालों का	अज्र	नहीं वो ज़ाया करता	अल्लाह

اِلَّا	فِي الْاَرْضِ	عَنِ الْفَسَادِ	يَّنْهَوْنَ	اُولُوْا بَقِيَّةٍ	مِنْ قَبْلِكُمْ
मगर	ज़मीन में	फ़साद से	जो रोकते	अंजाम पर नज़र रखने वाले	जो तुमसे पहले थीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَلِيۡلًا	مِّمَّنۡ	اَنۡجَيۡنَا	مِنۡهُمۡ ۚ	وَاتَّبَعَ	الَّذِيۡنَ	ظَلَمُوۡا
बहुत थोड़े	उनमें से जिन्हें	निजात दी हमने	उनमें से	और पीछे लगे	वो जिन्होंने	ज़ुल्म किया

مَاۤ	اُتۡرِفُوۡا	فِيۡهِ	وَكَانُوۡا	مُجۡرِمِيۡنَ (116)	وَمَا	كَانَ
उसके जो	वो ऐश व आराम दिए गए थे	जिसमें	और थे वो	मुजरिम	और नहीं	है

رَبُّكَ	لِيُهۡلِكَ	الۡقُرٰى	بِظُلۡمٍ	وَّاَهۡلُهَا	مُصۡلِحُوۡنَ (117)
रब आपका	कि वो हलाक कर दे	बस्तियों को	ज़ुल्म से	जबकि बाशिंदे उसके	इस्लाह करने वाले हों

وَلَوۡ	شَآءَ	رَبُّكَ	لَجَعَلَ	النَّاسَ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً
और अगर	चाहता	रब आपका	अलबत्ता वो बना देता	लोगों को	उम्मत	एक ही

وَّلَا يَزَالُوۡنَ	مُخۡتَلِفِيۡنَ (118) ۙ	اِلَّا	مَنۡ	رَّحِمَ	رَبُّكَ ؕ	وَلِذٰلِكَ
जबकि वो हमेशा रहेंगे	इख़्तिलाफ़ करने वाले	मगर	जिस पर	रहम करे	रब आपका	और इसी लिए

خَلَقَهُمۡ ؕ	وَتَمَّتۡ	كَلِمَةُ	رَبِّكَ	لَاَمۡلَئَنَّ	جَهَنَّمَ
उसने पैदा किया इन्हें	और पूरी हो गई	बात	आपके रब की	अलबत्ता में ज़रूर भरदूंगा	जहन्नम को

مِنَ الۡجِنَّةِ	وَالنَّاسِ	اَجۡمَعِيۡنَ (119)	وَكُلًّا	نَّقُصُّ	عَلَيۡكَ
जिन्नों से	और इंसानों से	सब के सब	और सब कुछ	हम बयान करते हैं	आप पर

مِنۡ اَنۡۢبَآءِ	الرُّسُلِ	مَا	نُثَبِّتُ	بِهٖ	فُؤَادَكَ ۚ	وَجَآءَكَ
बाज़ ख़बरें	रसूलों की	वो जो	हम मज़बूत करते हैं	साथ इसके	आपके दिल को	और आ गया आपके पास

فِىۡ هٰذِهِ	الۡحَقُّ	وَمَوۡعِظَةٌ	وَّذِكۡرٰى	لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ (120)	وَقُلۡ
उसमें	हक़	और नसीहत	और याददिहानी	ईमान लाने वालों के लिए	और कह दीजिए

لِّلَّذِيۡنَ	لَا يُؤۡمِنُوۡنَ	اعۡمَلُوۡا	عَلٰى مَكَانَتِكُمۡ ؕ	اِنَّا	عٰمِلُوۡنَ (121) ۙ
उन लोगों को जो	नहीं वो ईमान लाते	अमल करो	अपनी जगह पर	बेशक हम (भी)	अमल करने वाले हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَانْتَظِرُوْا ج	اِنَّا	مُنْتَظِرُوْنَ 122	وَلِلّٰهِ	غَيْبُ	السَّمٰوٰتِ
और इंतिज़ार करो	बेशक हम (भी)	इंतिज़ार करने वाले हैं	और अल्लाह ही के लिए है	ग़ैब	आसमानों का

وَالْاَرْضِ	وَاِلَيْهِ	يُرْجَعُ	الْاَمْرُ	كُلُّهٗ	فَاعْبُدْهُ	وَتَوَكَّلْ
और ज़मीन का	और तरफ़ उसी के	लौटाया जाता है	मामला	सारे का सारा	पस इबादत कीजिए उसकी	और तवक्कल कीजिए

10 ع 14 10

عَلَيْهِ ط	وَمَا	رَبُّكَ	بِغَافِلٍ	عَمَّا	تَعْمَلُوْنَ 123 ع
उस पर	और नहीं	रब आपका	ग़ाफ़िल	उससे जो	तुम अमल करते हो

آيَاتُهَا: 111 — سُورَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةٌ 12 53 — رُكُوعَاتُهَا: 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ قف	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ 1 قف	اِنَّآ	اَنْزَلْنٰهُ
الٓرٰ	ये	आयात हैं	वाज़ेह किताब की	बेशक हम	नाज़िल किया हमने इसे

قُرْءٰنًا	عَرَبِيًّا	لَّعَلَّكُمْ	تَعْقِلُوْنَ 2	نَحْنُ	نَقُصُّ	عَلَيْكَ
क़ुरआन	अरबी	ताकि तुम	तुम समझ सको	हम	हम बयान करते हैं	आप पर

اَحْسَنَ	الْقَصَصِ	بِمَآ	اَوْحَيْنَآ	اِلَيْكَ	هٰذَا	الْقُرْاٰنَ صلے ق
बेहतरीन	क़िस्सों में से	इस वजह से कि	वही की हमने	तरफ़ आपके	ये	क़ुरआन

وَاِنْ	كُنْتَ	مِنْ قَبْلِهٖ	لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ 3	اِذْ	قَالَ
और बेशक	थे आप	इससे पहले	अलबत्ता बेख़बरों में से	जब	कहा

يُوْسُفُ	لِاَبِيْهِ	يٰٓاَبَتِ	اِنِّيْ	رَاَيْتُ	اَحَدَ عَشَرَ
यूसुफ़ ने	अपने वालिद से	ऐ मेरे अब्बा जान	बेशक मैं	देखा मैंने (ख़्वाब में)	ग्यारह

كَوْكَبًا	وَّالشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ	رَاَيْتُهُمْ	لِيْ	سٰجِدِيْنَ 4	قَالَ
सितारों को	और सूरज	और चांद को	देखा मैंने उन्हें	मुझे	सज्दा करते हुए	उसने कहा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يٰبُنَيَّ	لَا تَقْصُصْ	رُءْيَاكَ	عَلٰٓى اِخْوَتِكَ	فَيَكِيْدُوْا	لَكَ
ऐ मेरे बेटे	ना तुम बयान करना	ख़्वाब अपना	अपने भाईयों पर	पस वो चाल चलेंगे	तेरे लिए

كَيْدًا ؕ	اِنَّ	الشَّيْطٰنَ	لِلْاِنْسَانِ	عَدُوٌّ	مُّبِيْنٌ ⑤	وَكَذٰلِكَ
एक चाल	बेशक	शैतान	इंसान के लिए	दुश्मन है	खुल्लम-खुल्ला	और इसी तरह

يَجْتَبِيْكَ	رَبُّكَ	وَيُعَلِّمُكَ	مِنْ تَاْوِيْلِ	الْاَحَادِيْثِ	وَيُتِمُّ
चुन लेगा तुझे	रब तेरा	और वो सिखाएगा तुझे	हक़ीक़त में से	बातों की	और वो पूरी कर दे

نِعْمَتَهٗ	عَلَيْكَ	وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ	كَمَآ	اَتَمَّهَا	عَلٰٓى اَبَوَيْكَ
अपनी नेअमत को	तुझ पर	और आले याक़ूब पर	जैसा कि	उसने पूरा किया उसे	तेरे दो बापों पर

مِنْ قَبْلُ	اِبْرٰهِيْمَ	وَاِسْحٰقَ ؕ	اِنَّ	رَبَّكَ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ⑥ ع
उससे पहले	इब्राहीम	और इसहाक़ पर	बेशक	रब तेरा	बहुत इल्म वाला है	ख़ूब हिक्मत वाला है

ع 1 6 11

لَقَدْ	كَانَ	فِيْ يُوْسُفَ	وَاِخْوَتِهٖٓ	اٰيٰتٌ	لِّلسَّآئِلِيْنَ ⑦	اِذْ
अलबत्ता तहक़ीक़	हैं	यूसुफ़ में	और उसके भाइयों में	निशानियां	सवाल करने वालों के लिए	जब

قَالُوْا	لَيُوْسُفُ	وَاَخُوْهُ	اَحَبُّ	اِلٰٓى اَبِيْنَا	مِنَّا	وَنَحْنُ
उन्होंने कहा	बिलाशुबा यूसुफ़	और उसका भाई	ज़्यादा प्यारे हैं	हमारे वालिद को	हमसे	हालांकि हम

عُصْبَةٌ ؕ	اِنَّ	اَبَانَا	لَفِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنِ ⑧ ج	اقْتُلُوْا	يُوْسُفَ
एक जत्था हैं	बेशक	वालिद हमारे	अलबत्ता भूल में हैं	वाज़ेह	क़त्ल कर दो	यूसुफ़ को

اَوِ	اطْرَحُوْهُ	اَرْضًا	يَّخْلُ	لَكُمْ	وَجْهُ	اَبِيْكُمْ
या	फेंक दो उसे	किसी ज़मीन में	ख़ाली हो जाएगा	तुम्हारे लिए	चेहरा	तुम्हारे वालिद का

وَتَكُوْنُوْا	مِنْ بَعْدِهٖ	قَوْمًا	صٰلِحِيْنَ ⑨	قَالَ	قَآئِلٌ	مِّنْهُمْ
और तुम हो जाना	बाद उसके	लोग	नेक	कहा	एक कहने वाले ने	उन्हीं में से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَلْتَقِطْهُ	الْجُبِّ	فِيْ غَيٰبَتِ	وَ اَلْقُوْهُ	يُوْسُفَ	لَا تَقْتُلُوْا
उठा लेगा उसे	कुवें की	गहराई में	और डाल दो उसे	यूसुफ़ को	ना तुम क़त्ल करो

يٰۤاَبَانَا	قَالُوْا	فٰعِلِيْنَ (10)	كُنْتُمْ	اِنْ	السَّيَّارَةِ	بَعْضُ
ऐ हमारे अब्बा जान	उन्होंने कहा	करने वाले	हो तुम	अगर	क़ाफ़िला	कोई

لَنٰصِحُوْنَ (11)	لَهٗ	وَ اِنَّا	عَلٰى يُوْسُفَ	لَا تَاْمَنَّا	لَكَ	مَا
यक़ीनन ख़ैर ख़्वाह हैं	उसके लिए	हालांकि बेशक हम	यूसुफ़ के मामले में	नहीं आप भरोसा करते हम पर	आपको	क्या है

لَهٗ	وَ اِنَّا	وَ يَلْعَبْ	يَّرْتَعْ	غَدًا	مَعَنَا	اَرْسِلْهُ
उसकी	और बेशक हम	और खेले	ख़ूब खाए पिए	कल	साथ हमारे	भेज दीजिए उसे

بِهٖ	تَذْهَبُوْا	اَنْ	لَيَحْزُنُنِيْۤ	اِنِّيْ	قَالَ	لَحٰفِظُوْنَ (12)
उसे	तुम ले जाओ	कि	अलबत्ता ग़मगीन करता है मुझे	बेशक मैं	उसने कहा	अलबत्ता हिफ़ाज़त करने वाले हैं

غٰفِلُوْنَ (13)	عَنْهُ	وَ اَنْتُمْ	الذِّئْبُ	يَّاْكُلَهُ	اَنْ	وَ اَخَافُ
ग़ाफिल हो	उससे	जबकि तुम	भेड़िया	खा जाए उसे	कि	और मैं डरता हूं

اِذًا	اِنَّآ	عُصْبَةٌ	وَنَحْنُ	الذِّئْبُ	اَكَلَهُ	لَئِنْ	قَالُوْا
तब	बेशक हम	एक जत्था हैं	जबकि हम	भेड़िया	खा जाए उसे	अलबत्ता अगर	उन्होंने कहा

يَّجْعَلُوْهُ	اَنْ	وَ اَجْمَعُوْۤا	بِهٖ	ذَهَبُوْا	فَلَمَّا	لَّخٰسِرُوْنَ (14)
वो डालेंगे उसे	कि	और उन्होंने तै कर लिया	उसे	वो ले गए	तो जब	अलबत्ता ख़सारा पाने वाले हैं

بِاَمْرِهِمْ	لَتُنَبِّئَنَّهُمْ	اِلَيْهِ	وَ اَوْحَيْنَاۤ	الْجُبِّ ج	فِيْ غَيٰبَتِ
इनके काम के बारे में	अलबत्ता तू ज़रूर आगाह करेगा उन्हें	तरफ़ उसके	और वही की हमने	कुवें की	गहराई में

يَّبْكُوْنَ (16) ط	عِشَآءً	اَبَاهُمْ	وَ جَآءُوْۤ	لَا يَشْعُرُوْنَ (15)	وَ هُمْ	هٰذَا
रोते हुए	इशा के वक़्त	अपने वालिद के पास	और वो आ गए	वो शऊर ना रखते होंगे	जबकि वो	इस

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُوسُفَ	وَتَرَكْنَا	نَسْتَبِقُ	ذَهَبْنَا	إِنَّا	يَٰٓأَبَانَآ	قَالُوا
यूसुफ़ को	और छोड़ गए हम	दौड़ का मुक़ाबला करते हुए	चले गए हम	बेशक हम	ऐ हमारे अब्बा जान	कहने लगे

بِمُؤْمِنٍ	أَنْتَ	وَمَآ	الذِّئْبُ ج	فَأَكَلَهُ	مَتَاعِنَا	عِنْدَ
यक़ीन करने वाले	आप	और नहीं	भेड़िया	फिर खा गया उसे	अपने सामान के	पास

بِدَمٍ	عَلَىٰ قَمِيصِهِ	وَجَآءُو	صَٰدِقِينَ (17)	كُنَّا	وَلَوْ	لَّنَا
ख़ून	उसकी क़मीज़ पर	और वो लाए	सच बोलने वाले	हों हम	और अगरचे	हम पर

الثلٰثة

فَصَبْرٌ	أَمْرًا ط	أَنْفُسُكُمْ	لَكُمْ	سَوَّلَتْ	بَلْ	قَالَ	كَذِبٍ ط
तो सब्र ही	एक काम को	तुम्हारे नफ़्सों ने	तुम्हारे लिए	अच्छा करके दिखाया	बल्कि	कहा	झूठा

وَجَآءَتْ	تَصِفُونَ (18)	عَلَىٰ مَا	الْمُسْتَعَانُ	وَاللَّهُ	جَمِيلٌ ط
और आया	तुम बयान कर रहे हो	उस पर जो	जिस से मदद तलब की जाती है	और अल्लाह ही है	अच्छा है

يَٰبُشْرَىٰ	قَالَ	دَلْوَهُ ط	فَأَدْلَىٰ	وَارِدَهُمْ	فَأَرْسَلُوا	سَيَّارَةٌ
वाह ख़ुशख़बरी	बोला	डोल अपना	तो उसने डाला	अपना पानी लाने वाला	तो उन्होंने भेजा	एक क़ाफ़िला

بِمَا	عَلِيمٌ م	وَاللَّهُ	بِضَٰعَةً ط	وَأَسَرُّوهُ	غُلَٰمٌ ط	هَٰذَا
उसे जो	ख़ूब जानने वाला है	और अल्लाह	सरमाया (समझ कर)	और उन्होंने छुपा लिया उसे	एक लड़का है	ये तो

مَعْدُودَةٍ ج	دَرَٰهِمَ	بَخْسٍ	بِثَمَنٍ	وَشَرَوْهُ	يَعْمَلُونَ (19)
गिने-चुने	दरहमों में	कम	क़ीमत पर	और उन्होंने बेच डाला उसे	वो अमल कर रहे थे

اشْتَرَىٰهُ	الَّذِي	وَقَالَ	مِنَ الزَّٰهِدِينَ (20) ع	فِيهِ	وَكَانُوا
ख़रीदा था उसे	जिसने	और कहा उस शख़्स ने	बेरग़बत लोगों में से	उसमें	और थे वो

ع 2 / 14 / 12

يَنْفَعَنَآ	أَنْ	عَسَىٰٓ	مَثْوَىٰهُ	أَكْرِمِي	لِامْرَأَتِهِٓ	مِنْ مِّصْرَ
वो नफ़ा देगा हमें	कि	उम्मीद है	ठिकाना इसका	बाइज़्ज़त कर	अपनी बीवी को	मिस्र से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِي الْاَرْضِ ۚ	لِيُوسُفَ	مَكَّنَّا	وَكَذٰلِكَ	وَلَدًا ؕ	نَتَّخِذَهٗ	اَوْ
ज़मीन में	यूसुफ़ को	जगह दी हमने	और इसी तरह	बेटा	हम बना लेंगे उसे	या

عَلٰٓى اَمْرِهٖ	غَالِبٌ	وَاللّٰهُ	الْاَحَادِيْثِ ؕ	مِنْ تَاْوِيْلِ	وَلِنُعَلِّمَهٗ
अपने काम पर	ग़ालिब है	और अल्लाह	बातों की	हक़ीक़त में से	और ताकि हम सिखाएं उसे

اَشُدَّهٗٓ	بَلَغَ	وَلَمَّا	لَا يَعْلَمُوْنَ (21)	النَّاسِ	اَكْثَرَ	وَلٰكِنَّ
अपनी जवानी को	वो पहुंचा	और जब	नहीं वो इल्म रखते	लोग	अक्सर	और लेकिन

الْمُحْسِنِيْنَ (22)	نَجْزِى	وَكَذٰلِكَ	وَّعِلْمًا ؕ	حُكْمًا	اٰتَيْنٰهُ
एहसान करने वालों को	हम बदला देते हैं	और इसी तरह	और इल्म	क़ुव्वते फ़ैसला	दिया हमने उसे

وَغَلَّقَتِ	عَنْ نَّفْسِهٖ	فِيْ بَيْتِهَا	هُوَ	الَّتِيْ	وَرَاوَدَتْهُ
और उसने अच्छी तरह बंद कर लिए	उसके नफ़्स से	घर में जिसके	वो (था)	उस औरत ने जो	और फुसलाना चाहा उसे

رَبِّيْٓ	اِنَّهٗ	اللّٰهِ	مَعَاذَ	قَالَ	هَيْتَ لَكَ ؕ	وَقَالَتْ	الْاَبْوَابَ
मेरा रब है	बेशक वो	अल्लाह की	पनाह	उसने कहा	आ जाओ तुम	और वो कहने लगी	दरवाज़े

وَلَقَدْ	الظّٰلِمُوْنَ (23)	لَا يُفْلِحُ	اِنَّهٗ	مَثْوَايَ ؕ	اَحْسَنَ
और अलबत्ता तहक़ीक़	जो ज़ालिम हैं	नहीं वो फ़लाह पाते	बेशक वो	ठिकाना मेरा	उसने अच्छा बनाया

بُرْهَانَ	رَّاٰ	اَنْ	لَوْلَآ	بِهَا	وَهَمَّ	بِهٖ ج	هَمَّتْ
बुरहान/रोशन दलील	वो देखता	कि	अगर ना(होता)	उसका	और वो इरादा कर लेता	उसका	उस औरत ने इरादा किया

اِنَّهٗ	وَالْفَحْشَآءَ ؕ	السُّوْٓءَ	عَنْهُ	لِنَصْرِفَ	كَذٰلِكَ	رَبِّهٖ ؕ
बेशक वो	और बेहयाई को	बुराई को	उस से	ताकि हम फेर दें	इसी तरह (हुआ)	अपने रब की

وَقَدَّتْ	الْبَابَ	وَاسْتَبَقَا	الْمُخْلَصِيْنَ (24)	مِنْ عِبَادِنَا
और उस औरत ने फाड़ दी	दरवाज़े की तरफ़	और वो दोनों दौड़े	जो ख़ालिस किए हुए हैं	हमारे बंदों में से था

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَمِيصَهُ	مِنْ دُبُرٍ	وَّ اَلْفَيَا	سَيِّدَهَا	لَدَا	الْبَابِ ط	قَالَتْ
क़मीज़ उसकी	पीछे से	और उन दोनों ने पाया	उसके आक़ा को	पास	दरवाज़े के	वो कहने लगी

مَا	جَزَآءُ	مَنْ	اَرَادَ	بِاَهْلِكَ	سُوْٓءًا	اِلَّآ	اَنْ	يُّسْجَنَ
क्या	बदला हो	उसका जो	इरादा करे	तेरी घर वाली के साथ	बुराई का	मगर	कि	वो क़ैद किया जाए

اَوْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (25)	قَالَ	هِيَ	رَاوَدَتْنِيْ	عَنْ نَّفْسِيْ	وَشَهِدَ
या	सज़ा (दिया जाए)	दर्दनाक	कहा	इसी ने	फिसलाना चाहा मुझे	मेरे नफ़्स से	और गवाही दी

شَاهِدٌ	مِّنْ اَهْلِهَا ج	اِنْ	كَانَ	قَمِيصُهُ	قُدَّ	مِنْ قُبُلٍ
एक गवाह ने	उस (औरत) के घर वालों में से	अगर	है	क़मीज़ उसकी	फाड़ी गई	सामने से

فَصَدَقَتْ	وَهُوَ	مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (26)	وَاِنْ	كَانَ	قَمِيصُهُ	قُدَّ
तो वो सच्ची है	और वो	झूठों में से है	और अगर	है	कमीज़ उसकी	फाड़ी गई

مِنْ دُبُرٍ	فَكَذَبَتْ	وَهُوَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (27)	فَلَمَّا	رَاٰ
पीछे से	तो वो झूठी है	और वो	सच्चों में से है	तो जब	उसने देखा

قَمِيصَهُ	قُدَّ	مِنْ دُبُرٍ	قَالَ	اِنَّهُ	مِنْ كَيْدِكُنَّ ط	اِنَّ
उसकी क़मीज़ को	फाड़ी गई है	पीछे से	उसने कहा	बेशक ये	तुम्हारी चाल में से है	बेशक

كَيْدَكُنَّ	عَظِيْمٌ (28)	يُوْسُفُ	اَعْرِضْ	عَنْ هٰذَا سكتة	وَاسْتَغْفِرِيْ
चाल तुम औरतों की	बहुत बड़ी हैं	ऐ यूसुफ़	दरगुज़र करो	इस से	और तू बख़्शिश मांग

لِذَنْۢبِكِ صلے	اِنَّكِ	كُنْتِ	مِنَ الْخٰطِـِٔيْنَ (29) ع	وَقَالَ	نِسْوَةٌ	فِي الْمَدِيْنَةِ
अपने गुनाह की	बेशक तू	है तू	ख़ताकारों में से	और कहा	औरतों ने	शहर में

ع 3 9 13

امْرَاَتُ	الْعَزِيْزِ	تُرَاوِدُ	فَتٰهَا	عَنْ نَّفْسِهٖ ج	قَدْ	شَغَفَهَا
औरत	अज़ीज़ की	वो फिसलाती है	अपने गुलाम को	उसके नफ़्स से	तहक़ीक़	वो उसके दिल में दाख़िल हो गया है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

حُبًّا ط	اِنَّا	لَنَرٰىهَا	فِیْ ضَلٰلٍ	مُّبِیْنٍ (30)	فَلَمَّا	سَمِعَتْ
मोहब्बत की रु से	बेशक हम	अलबत्ता हम देखती हैं उसे	गुमराही में	खुली-खुली	तो जब	उसने सुना

بِمَكْرِهِنَّ	اَرْسَلَتْ	اِلَیْهِنَّ	وَاَعْتَدَتْ	لَهُنَّ	مُتَّكَاً
मकर उन औरतों का	उसने भेजा	उनकी तरफ़ (दावत नामा)	और तैयार कीं	उनके लिए	मसनदें

وَّاٰتَتْ	كُلَّ	وَاحِدَةٍ	مِّنْهُنَّ	سِكِّیْنًا	وَّقَالَتِ	اخْرُجْ
और दी	हर	एक औरत को	उनमें से	एक छुरी	और कहने लगी	निकल आ

عَلَیْهِنَّ ج	فَلَمَّا	رَاَیْنَهٗۤ	اَكْبَرْنَهٗ	وَقَطَّعْنَ	اَیْدِیَهُنَّ
उन पर	तो जब	उन औरतों ने देखा उसे	मरऊब हो गईं उससे	और काट लिए	हाथ अपने

وَقُلْنَ	حَاشَ لِلّٰهِ	مَا	هٰذَا	بَشَرًا ط	اِنْ	هٰذَاۤ	اِلَّا
और वो कहने लगीं	حاشا لله	नहीं है	ये	कोई इंसान	नहीं है	ये	मगर

مَلَكٌ	كَرِیْمٌ (31)	قَالَتْ	فَذٰلِكُنَّ	الَّذِیْ	لُمْتُنَّنِیْ	فِیْهِ ط
फरिश्ता	मुअज़्ज़िज़	कहने लगी	तो ये है	वो शख़्स जो	तुम मलामत करती हो मुझे	जिस (के बारे) में

وَلَقَدْ	رَاوَدْتُّهٗ	عَنْ نَّفْسِهٖ	فَاسْتَعْصَمَ ط	وَلَئِنْ	لَّمْ
और अलबत्ता तहक़ीक़	मैंने फिसलाना चाहा उसे	उसके नफ़्स के बारे में	पस वो बच निकला	और अलबत्ता अगर	ना

یَفْعَلْ	مَاۤ	اٰمُرُهٗ	لَیُسْجَنَنَّ	وَلَیَكُوْنًا	مِّنَ الصّٰغِرِیْنَ (32)
उसने किया	जो	मैं हुक्म देती हूं उसे	अलबत्ता वह ज़रूर क़ैद किया जाएगा	और अलबत्ता वह हो जाएगा	ज़लील होने वालों में से

قَالَ	رَبِّ	السِّجْنُ	اَحَبُّ	اِلَیَّ	مِمَّا	یَدْعُوْنَنِیْۤ
उसने कहा	ऐ मेरे रब	क़ैदख़ाना	ज़्यादा महबूब है	मुझे	उससे जो	वो बुलाती हैं मुझे

اِلَیْهِ ج	وَاِلَّا	تَصْرِفْ	عَنِّیْ	كَیْدَهُنَّ	اَصْبُ	اِلَیْهِنَّ
तरफ़ जिसके	और अगर नहीं	तू फेरेगा	मुझसे	चाल उनकी	मैं मायल हो जाऊंगा	तरफ़ उनके

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ اَكُنۡ	مِّنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿33﴾	فَاسۡتَجَابَ	لَهٗ	رَبُّهٗ	فَصَرَفَ
और मैं हो जाऊंगा	जाहिलों में से	पस (दुआ) क़ुबूल कर ली	उसकी	उसके रब ने	तो उसने फेर दी

عَنۡهُ	كَيۡدَهُنَّ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	السَّمِيۡعُ	الۡعَلِيۡمُ ﴿34﴾	ثُمَّ	بَدَا
उससे	चाल उन औरतों की	बेशक वो	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	फिर	ज़ाहिर हो गया

لَهُمۡ	مِّنۡۢ بَعۡدِ	مَا	رَاَوُا	الۡاٰيٰتِ	لَيَسۡجُنُنَّهٗ
उनके लिए	बाद इसके	जो	उन्होंने देखीं	निशानियां	अलबत्ता वो ज़रूर क़ैद कर दें उसे

ع 4 6 14

حَتّٰى حِيۡنٍ ﴿35﴾ ع	وَدَخَلَ	مَعَهُ	السِّجۡنَ	فَتَيٰنِ ؕ	قَالَ
एक वक़्त तक	और दाख़िल हुए	साथ उसके	क़ैदख़ाने में	दो जवान	कहा

اَحَدُهُمَاۤ	اِنِّىۡۤ	اَرٰٮنِىۡۤ	اَعۡصِرُ	خَمۡرًا ۚ	وَقَالَ	الۡاٰخَرُ
उन दोनों में से एक ने	बेशक मैं	मैं देखता हूं ख़ुद को	मैं निचोड़ रहा हूं	शराब	और कहा	दूसरे ने

اِنِّىۡۤ	اَرٰٮنِىۡۤ	اَحۡمِلُ	فَوۡقَ رَاۡسِىۡ	خُبۡزًا	تَاۡكُلُ	الطَّيۡرُ
बेशक मैं	मैं देखता हूं ख़ुद को	मैं उठाए हुए हूं	अपने सर के ऊपर	रोटी	खाते हैं	परिंदे

مِنۡهُ ؕ	نَبِّئۡنَا	بِتَاۡوِيۡلِهٖ ۚ	اِنَّا	نَرٰٮكَ	مِنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿36﴾
उससे	बताओ हमें	ताबीर इसकी	बेशक हम	हम देखते हैं तुझे	मोहसिनीन में से

قَالَ	لَا يَاۡتِيۡكُمَا	طَعَامٌ	تُرۡزَقٰنِهٖۤ	اِلَّا	نَبَّاۡتُكُمَا
उसने कहा	नहीं आएगा तुम दोनों के पास	खाना	तुम दोनों दिए जाते हो उसे	मगर	मैं बता दूंगा तुम दोनो को

بِتَاۡوِيۡلِهٖ	قَبۡلَ	اَنۡ	يَّاۡتِيَكُمَا ؕ	ذٰلِكُمَا	مِمَّا	عَلَّمَنِىۡ
ताबीर उसकी	इससे पहले	कि	वो आए तुम दोनों के पास	ये	उसमें से है जो	सिखाया मुझे

رَبِّىۡ ؕ	اِنِّىۡ	تَرَكۡتُ	مِلَّةَ	قَوۡمٍ	لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ	بِاللّٰهِ
मेरे रब ने	बेशक मैं	छोड़ दिया मैंने	दीन	उन लोगों का	जो नहीं ईमान रखते	अल्लाह पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَهُمْ	بِالْاٰخِرَةِ	هُمْ	كٰفِرُوْنَ ﴿37﴾	وَاتَّبَعْتُ	مِلَّةَ	اٰبَآءِىْٓ
और वो	साथ आख़िरत के	वो ही	कुफ़्र करने वाले हैं	और मैं ने पैरवी की	दीन की	अपने आबा ओ अजदाद के

اِبْرٰهِيْمَ	وَاِسْحٰقَ	وَيَعْقُوْبَ ؕ	مَا	كَانَ	لَنَآ	اَنْ
इब्राहीम	और इसहाक़	और याक़ूब के	नहीं	है	हमारे लिए	कि

نُّشْرِكَ	بِاللّٰهِ	مِنْ شَيْءٍ ؕ	ذٰلِكَ	مِنْ فَضْلِ	اللّٰهِ
हम शरीक ठहराऐं	साथ अल्लाह के	किसी चीज़ को	ये	फ़ज़्ल में से है	अल्लाह के

عَلَيْنَا	وَعَلَى النَّاسِ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿38﴾
हम पर	और लोगों पर	और लेकिन	अक्सर	लोग	वो शुक्र अदा नहीं करते

يٰصَاحِبَيِ	السِّجْنِ	ءَاَرْبَابٌ	مُّتَفَرِّقُوْنَ	خَيْرٌ	اَمِ	اللّٰهُ
ऐ मेरे दो साथियो	क़ैद ख़ाने के	क्या बहुत से रब	मुतफ़र्रिक़/जुदा-जुदा	बेहतर हैं	या	अल्लाह

الْوَاحِدُ	الْقَهَّارُ ﴿39﴾ ؕ	مَا	تَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖٓ	اِلَّآ	اَسْمَآءً
जो एक है	बहुत ज़बरदस्त है	नहीं	तुम इबादत करते	उसके सिवा	मगर	चंद नामों की

سَمَّيْتُمُوْهَآ	اَنْتُمْ	وَاٰبَآؤُكُمْ	مَّآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	بِهَا
नाम रख लिए तुमने उनके	तुमने	और तुम्हारे आबा ओ अजदाद ने	नहीं	उतारी	अल्लाह ने	उनकी

مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ	اِنِ	الْحُكْمُ	اِلَّا	لِلّٰهِ ؕ	اَمَرَ	اَلَّا	تَعْبُدُوْٓا
कोई दलील	नहीं	हुक्म	मगर	अल्लाह ही के लिए	उसने हुक्म दिया है	कि ना	तुम इबादत करो

اِلَّآ	اِيَّاهُ ؕ	ذٰلِكَ	الدِّيْنُ	الْقَيِّمُ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ
मगर	सिर्फ़ उसी की	ये है	दीन	दुरुस्त	और लेकिन	अक्सर	लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿40﴾	يٰصَاحِبَيِ	السِّجْنِ	اَمَّآ	اَحَدُكُمَا	فَيَسْقِيْ
नहीं वो जानते	ऐ मेरे दो साथियों	क़ैदख़ाने के	रहा	तुम दोनों में से एक	पस वो पिलाएगा

© AL-QURAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الطَّيْرُ	فَتَاْكُلُ	فَيُصْلَبُ	الْاٰخَرُ	وَاَمَّا	خَمْرًا ج	رَبَّهٗ
परिंदे	तो खाएंगे	पस वो सूली चढ़ाया जाएगा	दूसरा	और रहा	शराब	अपने आक़ा को

تَسْتَفْتِيٰنِ (41) ط	فِيْهِ	الَّذِيْ	الْاَمْرُ	قُضِيَ	مِنْ رَّاْسِهٖ ط
तुम दोनो पूछते हो	जिस (के बारे) में	वो जो	मामले का	फ़ैसला कर दिया गया	उसके सर से

اذْكُرْنِيْ	مِّنْهُمَا	نَاجٍ	اَنَّهٗ	ظَنَّ	لِلَّذِيْ	وَقَالَ
ज़िक्र करना मेरा	उन दोनों में से	निजात पाने वाला है	कि बेशक वो	उसे यक़ीन था	उसे जिसका	और कहा

فَلَبِثَ	رَبِّهٖ	ذِكْرَ	الشَّيْطٰنُ	فَاَنْسٰهُ	رَبِّكَ ز	عِنْدَ
तो वो ठहरा रहा	अपने आक़ा से	ज़िक्र करना	शैतान ने	तो भुला दिया उसे	अपने आक़ा के	पास

اَرٰى	اِنِّيْٓ	الْمَلِكُ	وَقَالَ	سِنِيْنَ (42) ط ع	بِضْعَ	فِي السِّجْنِ
मैं देखता हूं	बेशक मैं	बादशाह ने	और कहा	साल	चंद	क़ैद ख़ाने में

ع 5 7 15

وَّسَبْعَ	عِجَافٌ	سَبْعٌ	يَّاْكُلُهُنَّ	سِمَانٍ	بَقَرٰتٍ	سَبْعَ
और सात	दुबली	सात	खा रही हैं उन्हें	मोटी	गायें	सात

اَفْتُوْنِيْ	يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ	يٰبِسٰتٍ ط	وَّاُخَرَ	خُضْرٍ	سُنْبُلٰتٍ
जवाब दो मुझे	ऐ सरदारो	खुश्क	और दूसरी	सरसब्ज़	बालियां

اَضْغَاثُ	قَالُوْٓا	تَعْبُرُوْنَ (43)	لِلرُّءْيَا	كُنْتُمْ	اِنْ	فِيْ رُءْيَايَ
परेशान	उन्होंने कहा	तुम ताबीर करते	ख़्वाब की	हो तुम	अगर	मेरे ख़्वाब के बारे में

وَقَالَ	بِعٰلِمِيْنَ (44)	الْاَحْلَامِ	بِتَاْوِيْلِ	نَحْنُ	وَمَا	اَحْلَامٍ ج
और कहा	जानने वाले	ख़्वाबों की	ताबीर को	हम	और नहीं	ख़्वाब है

اُنَبِّئُكُمْ	اَنَا	اُمَّةٍ	بَعْدَ	وَادَّكَرَ	مِنْهُمَا	نَجَا	الَّذِيْ
बताता हूं तुम्हें	मैं	एक मुद्दत के	बाद	और उसे याद आ गया	उन दोनो में से	निजात पा गया था	उस शख़्स ने जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَفْتِنَا	اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ	يُوْسُفُ	فَاَرْسِلُوْنِ (45)	بِتَاْوِيْلِهٖ
बताओ हमें	ऐ बहुत सच्चे	यूसुफ़	पस भेजो मुझे	ताबीर इसकी

وَّسَبْعٍ	عِجَافٌ	سَبْعٌ	يَّاْكُلُهُنَّ	سِمَانٍ	فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ
और सात	दुबली	सात	खा रही हैं उन्हें	मोटी	सात गायों के बारे में

اِلَى النَّاسِ	اَرْجِعُ	لَّعَلِّيْٓ	يٰبِسٰتٍ ۙ	وَّاُخَرَ	خُضْرٍ	سُنْۢبُلٰتٍ
तरफ़ लोगों के	मैं लौटूं	ताकि मैं	ख़ुश्क	और दूसरी	सरसब्ज़	बालियां

دَاَبًا ۚ	سِنِيْنَ	سَبْعَ	تَزْرَعُوْنَ	قَالَ	يَعْلَمُوْنَ (46)	لَعَلَّهُمْ
मुतावातिर	साल	सात	तुम खेती-बाड़ी करोगे	उसने कहा	वो जान लें	शायद कि वो

مِّمَّا	قَلِيْلًا	اِلَّا	فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ	فَذَرُوْهُ	حَصَدْتُّمْ	فَمَا
उसमें से जो	थोड़ा	मगर	उसकी बाली में	तो छोड़ देना उसे	काट लो तुम	पस जो

يَّاْكُلْنَ	شِدَادٌ	سَبْعٌ	مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ	يَاْتِيْ	ثُمَّ	تَاْكُلُوْنَ (47)
खा जाऐंगे	सख़्त	सात (साल)	बाद इसके	आऐंगे	फिर	तुम खाओ

ثُمَّ	تُحْصِنُوْنَ (48)	مِّمَّا	قَلِيْلًا	اِلَّا	لَهُنَّ	قَدَّمْتُمْ	مَا
फिर	तुम महफ़ूज़ रखोगे	उसमें से जो	थोड़ा	मगर	उनके लिए	पहले रखा तुमने	जो

وَفِيْهِ	النَّاسُ	يُغَاثُ	فِيْهِ	عَامٌ	مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ	يَاْتِيْ
और उसमें	लोग	बारिश दिए जाऐंगे	जिसमें	एक साल	बाद उसके	आएगा

ع 6 / 7 / 16

جَآءَهُ	فَلَمَّا	بِهٖ ۚ	ائْتُوْنِيْ	الْمَلِكُ	وَقَالَ	يَعْصِرُوْنَ (49) ع
आया उसके पास	तो जब	उसे	लाओ मेरे पास	बादशाह ने	और कहा	वो रस निचोड़ेंगे

النِّسْوَةِ	بَالُ	مَا	فَسْئَلْهُ	اِلٰى رَبِّكَ	ارْجِعْ	قَالَ	الرَّسُوْلُ
उन औरतों का	हाल है	क्या	फिर उससे पूछो	तरफ़ अपने आक़ा के	वापस जाओ	कहा (यूसुफ़ ने)	पैग़ाम लाने वाला

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلِيْمٌ (50)	بِكَيْدِهِنَّ	رَبِّيْ	اِنَّ	اَيْدِيَهُنَّ ؕ	قَطَّعْنَ	الّٰتِيْ
ख़ूब वाक़िफ़ है	उनकी चाल से	रब मेरा	बेशक	हाथ अपने	काट लिए थे	जिन्होंने

عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ	يُوْسُفَ	رَاوَدْتُّنَّ	اِذْ	خَطْبُكُنَّ	مَا	قَالَ
उसके नफ़्स से	यूसुफ़ को	तुमने फिसलाना चाहा था	जब	मामला है तुम्हारा	क्या	कहा (बादशाह ने)

امْرَاَتُ	قَالَتِ	مِنْ سُوْٓءٍ ؕ	عَلَيْهِ	عَلِمْنَا	مَا	حَاشَ لِلّٰهِ	قُلْنَ
औरत	कहने लगी	किसी बुराई को	उस पर	जाना हमने	नहीं	हाशा लिल्लाही	कहने लगीं

عَنْ نَّفْسِهٖ	رَاوَدْتُّهٗ	اَنَا	الْحَقُّ ز	حَصْحَصَ	الْـٰٔنَ	الْعَزِيْزِ
उसके नफ़्स से	फिसलाया था मैंने उसे	मैंने	हक़	ज़ाहिर हो गया	अब	अज़ीज़ की

لَمْ اَخُنْهُ	اَنِّيْ	لِيَعْلَمَ	ذٰلِكَ	لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ (51)	وَاِنَّهٗ
नहीं ख़्यानत की मैंने उसकी	बेशक मैं	ताकि वो जान ले	ये	अलबत्ता सच्चों में से है	और बेशक वो

الْخَآئِنِيْنَ (52)	كَيْدَ	لَا يَهْدِيْ	اللّٰهَ	وَاَنَّ	بِالْغَيْبِ
ख़्यानत करने वालों के	मकर को	नहीं वो राह दिखाता	अल्लाह	और बेशक	ग़ायबाना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION